हिंदी पुस्तक – 3

(प्रथम भाषा)

(तीसरी कक्षा के लिए)

R3J4B2

ਸਮੱਗਰ ਸਿੱਖਿਆ ਅਭਿਆਨ

ਪੜ੍ਹੋ ਸਾਰੇ ਵਧੋ ਸਾਰੇ

ਸਿੱਖਿਆ ਅਤੇ ਭਲਾਈ ਵਿਭਾਗ, ਪੰਜਾਬ ਦਾ ਸਾਂਝਾ ਉਪਰਾਲਾ

पंजाब स्कूल शिक्षा बोर्ड

साहिबज़ादा अजीत सिंह नगर

© पंजाब सरकार

संशोधित संस्करण : 2020-21..................... 40,700 प्रतियाँ

संशोधित संस्करण : 2021-22 .... प्रतियाँ

All rights, including those of translation, reproduction
and annotation etc., are reserved by the
Punjab Government.

सम्पादक : शशि प्रभा जैन

डॉ॰ सुनील बहल

चित्रकार : कुलजीत कौर

चेतावनी

1. कोई भी एजेंसी–होल्डर अधिक पैसे लेने के उद्देश्य से पाठ्य–पुस्तकों पर जिल्दबंदी नहीं कर सकता। (एजेंसी–होल्डरों के साथ हुए समझौते की धारा नं. 7 के अनुसार)
2. पंजाब स्कूल शिक्षा बोर्ड द्वारा मुद्रित तथा प्रकाशित पाठ्य–पुस्तकों के जाली और नकली प्रकाशन (पाठ्य–पुस्तकों) की छपाई, प्रकाशन, स्टॉक करना, जमाखोरी या बिक्री आदि करना भारतीय दंड प्रणाली के अंतर्गत गैरकानूनी जुर्म है।

   (पंजाब स्कूल शिक्षा बोर्ड की पाठ्य–पुस्तकें बोर्ड के 'वाटर मारक' वाले कागज़ के ऊपर ही मुद्रित की जाती हैं।)

ਸਮੱਗਰ ਸਿੱਖਿਆ ਅਭਿਆਨ

ਪੜ੍ਹੋ ਸਾਰੇ ਵਧੋ ਸਾਰੇ

ਸਿੱਖਿਆ ਅਤੇ ਭਲਾਈ ਵਿਭਾਗ, ਪੰਜਾਬ ਦਾ ਸਾਂਝਾ ਉਪਰਾਲਾ

ਇਹ ਪੁਸਤਕ ਵਿਕਰੀ ਲਈ ਨਹੀਂ ਹੈ।

सचिव, पंजाब स्कूल शिक्षा बोर्ड, विद्या भवन फेज़–8, साहिबज़ादा अजीत सिंह नगर 160062 द्वारा प्रकाशित तथा
. मैस : **राहुल आर्ट एंड प्रैस,** जालंधर द्वारा मुद्रित।

प्राक्कथन

पिछले कुछ वर्षों से राष्ट्रीय स्तर पर शिक्षा के ढाँचे में मूलभूत परिवर्तन लाने के विभिन्न प्रयास हो रहे हैं। इसका उद्देश्य विद्यार्थियों के लिए बिना पक्षपात के शिक्षा को अधिक से अधिक लाभदायक बनाना है ताकि बच्चा बालिग होने तक केवल अक्षर ज्ञान तक ही सीमित होकर न रह जाए बल्कि मानवीय जीवन जैसी ईश्वरीय देन को अधिक सुंदर और जीने योग्य बनाने में अधिक से अधिक योगदान दे सके। आज हम जिस परिस्थिति में से गुज़र रहे हैं, उसमें सही शिक्षा देना और पढ़ना बच्चे और अध्यापक दोनों का सामूहिक उत्तरदायित्व है।

बोर्ड ने इस उत्तरदायित्व को समझते हुए आधुनिक शैक्षिक आवश्यकताओं के आधार पर हिंदी विषय (प्रथम भाषा) के प्राइमरी स्तर के पाठ्यक्रम और पाठ्य-पुस्तकों का नवीकरण करने की योजना बनायी है। प्रवेश वर्ष 2007 से प्राइमरी स्तर पर मातृभाषा हिंदी पढ़ने वाले विद्यार्थियों के लिए पाठ्य-पुस्तकों के नवीकरण की योजना आरम्भ की हुई है। पहली और दूसरी कक्षा के विद्यार्थियों के लिए नई पाठ्य-पुस्तकें लागू हो चुकी हैं।

हस्तीय पाठ्य-पुस्तक हमारा तृतीय प्रयास है। पाठ्य-पुस्तक में द्वितीय प्रयास को आगे बढ़ाया गया है। पाठों का चयन मानसिक एवं बौद्धिक स्तर के अनुकूल किया गया है। प्रत्येक पाठ किसी न किसी नैतिक एवं मानवीय मूल्य को विकसित करता है। पाठ्य-पुस्तक के विस्तृत अभ्यास भाषायी ज्ञान देने के साथ-साथ बच्चों की सूझ-बूझ एवं रचनात्मक क्षमता को विकसित करने में सहायक हैं। पाठ्य-पुस्तक में दिये गये चित्र जहाँ बच्चों में रोचकता उत्पन्न करने में सहायक होंगे वहीं पुस्तक को आकर्षक रूप देने में भी सहायक होंगे।

हमें पूर्ण आशा है कि यह पुस्तक भाषा शिक्षा के मापदंडों पर खरी उतरेगी और विद्यार्थियों में मातृभाषा का ज्ञान देने में सहायक होगी। फिर भी, पुस्तक को और अधिक उपयोगी बनाने के लिए क्षेत्र से आए सभी सुझाव बोर्ड द्वारा आदर सहित स्वीकार किये जायेंगे।

चेयरमैन

पंजाब स्कूल शिक्षा बोर्ड

विषय- सूची

पाठ संख्या	पाठ	लेखक	जीवन मूल्य	पृष्ठ संख्या
1.	प्रभु शक्ति इतनी देना (कविता)	डॉ॰ आर॰ एस॰ तिवारी	प्रार्थना-मानव सेवा	1
2.	अपना काम स्वयं करो	संकलित	सोच-समझकर निर्णय लेना	4
3.	मोर	सरोज आर्य	राष्ट्रीय पक्षी	9
4.	छुक-छुक करती आई रेल	शिव शंकर	रेल संबंधी ज्ञान	13
5.	कोयल (कविता)	संकलित	मधुर वाणी का महत्व	18
6.	ऐनकू	बिमला देवी	सहपाठियों से मित्रतापूर्ण व्यवहार	22
7.	बालक सुभाष	शिव शंकर	देश भक्ति	29
8.	एक खास बाग़ : जलियाँवाला बाग़	कमलेश भारतीय	ऐतिहासिक स्मारक	33
9.	पेड़ (कविता)	संकलित	पर्यावरण के प्रति जागरूकता	36
10.	चौराहे का दीया	कमलेश भारतीय	सर्वधर्म समभाव	40
11.	रहना ज़रा संभल के	शिव शंकर	पेड़ों का महत्त्व	45
12.	एडीसन	सुधा जैन 'सुदीप'	वैज्ञानिक चेतना	51
13.	किसान (कविता)	संकलित	कर्मठता	56
14.	रास्ते का पत्थर	संकलित	रुकावटों का तत्काल समाधान	60
15.	झंडा ऊँचा रहे हमारा	सरोज आर्य	राष्ट्रीय ध्वज: जानकारी एवं महत्व	65
16.	चालीस मुक्ते	संकलित	क्षमाशीलता	70
17.	हमारे त्योहार (कविता)	सुधा जैन 'सुदीप'	त्योहारों का महत्व	74
18.	रॉक गार्डन (पत्र)	डॉ. सुनील बहल	कलात्मक चेतना	78
19.	शिष्टाचार	डॉ. सुनील बहल	शिष्ट सौम्य व्यवहार	82
20.	होनहार बालक चंद्रगुप्त (एकांकी)	संकलित	ऐतिहासिक पात्र चंद्रगुप्त की वीरता, न्याय, साहस और नेतृत्व	87
21.	उपकार का फल	विजय कुमार	पशु-पक्षियों में उपकार, दया, सहानुभूति, कृतज्ञता की भावना	93
22.	गुरु गोबिंद सिंह को शीश झुकाएँ (कविता)	विनोद शर्मा	अध्यात्म व बलिदान	98
23.	सत्यं वद	डॉ. सुनील बहल	युधिष्ठिर चरित्र गौरव : सत्यवादिता	101
24.	हिम्मत	विक्रमजीत नूर	हिम्मत	104

पाठ–1

प्रभु शक्ति इतनी देना

प्रभु शक्ति इतनी देना,
मन पर विजय करें हम।
संयम से काम लेकर,
जीवन में जय करें हम।
प्रभु शक्ति इतनी देना...॥

सत्कर्म नित करें हम,
हर पाप से बचें हम।
अब भेद–भाव सबके,
मन से मिटा सकें हम।

नित सत्य पर चलें हम,
और झूठ से बचें हम।
संयम से काम लेकर,
जीवन में जय करें हम।
प्रभु शक्ति इतनी देना....॥

सत्धर्म नित करें हम,
सत्मार्ग पर चलें हम।
नित मुश्किलों का हरदम,
खुद सामना करें हम।

उपकार नित करें हम,
अपकार से बचें हम।
संयम से काम लेकर,
जीवन में जय करें हम।
प्रभु शक्ति इतनी देना....॥

शब्दार्थ

प्रभु	=	ईश्वर, भगवान	विजय	=	जीत
संयम	=	नियंत्रण, बुरे कामों से परहेज	सत्कर्म	=	नेक काम
भेदभाव	=	दो व्यक्तियों के साथ अलग-अलग प्रकार का व्यवहार			
सत्धर्म	=	धर्म के अनुसार उचित व्यवहार या आचरण	सत्मार्ग	=	अच्छा रास्ता
उपकार	=	दूसरों का भला करना			
अपकार	=	किसी का बुरा करना	मुश्किलें	=	कठिनाइयाँ

बताओ

1. बच्चे ईश्वर से क्या प्रार्थना कर रहे हैं?
2. बच्चे कौन-कौन से अच्छे काम कर सकते हैं?
3. सच्चाई के मार्ग पर चलते हुए किससे बचने को कह रहे हैं?
4. बच्चे दूसरों का भला कैसे कर सकते हैं?
5. इस कविता में कवि ने क्या प्रेरणा दी है?

पंक्तियाँ पूरी करो

मन पर .... करें हम।
सत्कर्म .... करें हम,

हर .... से बचें हम।

नित .... पर चलें हम।

और .... से बचें हम।

वाक्यों में प्रयोग करो

प्रभु = ...

सत्कर्म = ...

उपकार = ...

भेदभाव = ...

'सत्' जोड़कर नये शब्द बनाओ

सत् + कर्म = ...   सत् + मार्ग = ...

सत् + धर्म = ...   सत् + य = ...

उल्टे अर्थ वाले शब्द मिलाओ

विजय	झूठ
उपकार	पुण्य
पाप	पराजय
सत्य	अपकार

नये शब्द बनाओ

शब्द	संयुक्त अक्षर	नये शब्द	
शक्ति	क्त	व्यक्ति	उक्ति
प्रभु	प्र	....	....
सत्य	त्य	....	....
संयम	सं	....	....

सीखो अच्छी आदत जग में,
ताकि लोग पहचानें।
करें तुम्हारी नित्य प्रशंसा
प्रियवर अपना मानें

पाठ–2

अपना काम स्वयं करो

गेहूँ के खेत में एक चिड़िया अपने तीन छोटे–छोटे बच्चों के साथ रहती थी। गेहूँ के पौधे काफी बड़े थे इसलिए चिड़िया और उसके बच्चों को कोई देख नहीं सकता था। जब चिड़िया बाहर चली जाती, बच्चे वहीं खेलते और नाचते–गाते रहते।

कुछ दिन बीत गये। गेहूँ के पौधे और भी बड़े हो गये। चिड़िया के बच्चे भी कुछ बड़े हो गये, पर अभी वे उड़ नहीं सकते थे। एक दिन वे खेल रहे थे। उनकी माँ दाना लाने बाहर गई हुई थी। इतने में उन्होंने देखा कि किसान और उसका बेटा बातें करते उधर आ रहे हैं।

''चीं–चीं, चीं–चीं, देखो उधर देखो। कोई आ रहा है'', एक बच्चे ने कहा।

''चुप–चुप, वे हमें देख लेंगे'', दूसरे ने कहा। बच्चे चुप हो गये और उनकी बातें सुनने लगे। किसान अपने बेटे से कह रहा था, ''देखो, अब गेहूँ पकने लगे हैं। दो–तीन दिन में ही इनको काट लेना चाहिये।''

किसान ने एक पौधा अपने बेटे को दिखाया और कहा, ''देखो, जब सब पौधे

ऐसे हो जायें तब समझ लेना चाहिये कि ये पक गये हैं। इन्हें हम अपने पड़ोसियों से कटवायेंगे। चलो बेटा, हम उनसे कह दें।''

किसान की बात सुनकर बच्चे डर गये। उन्होंने सोचा कि गेहूँ कटने के बाद हम खेत में नहीं रह सकेंगे। कुछ देर बाद चिड़िया आ गयी।

''चीं-चीं, चीं-चीं'', सब एक साथ चिल्लाने लगे ।

''माँ, माँ चलो, यहाँ से चलें,'' एक ने कहा।

''मुझे तो बहुत डर लग रहा है'', दूसरा बोला।

तीसरे ने कहा, ''माँ, माँ, यहाँ से किसी दूसरी जगह चलो।''

चिड़िया ने पूछा, ''क्यों, क्या बात है? क्यों चिल्ला रहे हो? तुम इतने डरे हुए क्यों हो?''

एक बच्चे ने कहा, ''माँ जब तुम चली गई थी तब किसान और उसका बेटा यहाँ आये थे। किसान कह रहा था कि मैं दो-तीन दिन में गेहूँ कटवाऊँगा।''

दूसरे ने कहा, ''वह अपने पड़ोसियों से गेहूँ कटवाएगा। वह उनसे कहने गया है।''

माँ ने पूछा, ''क्या उसने यह कहा था कि वह अपने पड़ोसियों से गेहूँ कटवाएगा?''

''हाँ, वह यही कह रहा था'', बच्चों ने बताया।

चिड़िया ने कहा, ''तो फिर डरो मत। उसके पड़ोसी गेहूँ काटने नहीं आयेंगे। हम यहीं रहेंगे।''

तीन दिन बीत गये। गेहूँ काटने कोई नहीं आया।

अगले दिन जब चिड़िया बाहर गई, तब किसान और उसका बेटा फिर खेत पर आये।

किसान ने कुछ पौधों को हाथ में लेकर कहा, ''पड़ोसी तो नहीं आये। गेहूँ और भी पक गये हैं। इन्हें काटने के लिए कल मैं अपने भाइयों को ज़रूर भेजूँगा। चलो बेटा, हम उनसे कह दें।''

जब शाम को चिड़िया खाना लेकर आई, बच्चों ने उसे सारी बात बता दी। चिड़िया ने कहा, ''डरो मत, उसके भाई भी नहीं आयेंगे। उनके पास बहुत से काम हैं।''

अगले दिन भी गेहूँ काटने कोई नहीं आया। शाम को किसान और उसका बेटा फिर खेत पर आये। किसान ने कहा, ''देखो, भाइयों ने भी हमारे गेहूँ नहीं काटे। कल हम स्वयं इन्हें काटेंगे।''

जब चिड़िया ने बच्चों से किसान की बात सुनी तब उसने कहा, ''किसान कल गेहूँ काटने ज़रूर आयेगा। उसने समझ लिया है कि अपना काम अपने ही करने से होता है। अब हमें यहाँ से किसी दूसरी जगह चल देना चाहिये। अब तो तुम उड़ भी सकते हो। किसान कल गेहूँ काटने ज़रूर आयेगा।''

अगले दिन किसान और उसका बेटा स्वयं गेहूँ काटने आये। पर चिड़िया और उसके बच्चे उनके आने से पहले ही उड़ गये थे।

शब्दार्थ

स्वयं = अपने आप

पड़ोसी = घर के पास रहने वाले लोग

बताओ

1. चिड़िया अपने बच्चों के साथ कहाँ रहती थी?
2. गेहूँ पकने पर किसान क्या करता है?
3. जब गेहूँ काटने कोई नहीं आया तो किसान ने क्या किया?
4. चिड़िया ने क्यों सोचा कि अब उसे खेत से उड़ जाना चाहिये?

पढ़ो, समझो और लिखो

मिठाई	**मिठाइयाँ**	मक्खी	**मक्खियाँ**
दवाई	....	बिल्ली	....
सलाई	....	सब्ज़ी	....
रज़ाई	....	पत्ती	....

सही शब्द चुनकर वाक्य पूरे करो

पौधा, गेहूँ, तीन, दाना, स्वयं

1. गेहूँ के खेत में चिड़िया अपने .... बच्चों के साथ रहती थी।
2. उनकी माँ .... लाने बाहर गई हुई थी।
3. किसान अपने पड़ोसियों से .... कटवाएगा।
4. किसान ने एक .... अपने बेटे को दिखाया।
5. कल हम .... गेहूँ काटेंगे।

वाक्य बनाओ

किसान, बच्चे, गेहूँ, पौधे, पड़ोसी

किसान = ...

बच्चे = ...

गेहूँ = ...

पौधे = ...

पड़ोसी = ...

वाक्यों को पढ़ो, समझो और लिखो

1. चिड़िया ने कहा।

   चिड़ियों ने कहा

2. वह अपने पड़ोसी से गेहूँ कटवाएगा

   वह अपने .... से गेहूँ कटवाएगा।

3. कल मैं अपने भाई को ज़रूर भेजूँगा।

   कल मैं अपने .... को ज़रूर भेजूँगा।

4. किसान ने गेहूँ काटा

   .... ने गेहूँ काटे।

5. खेत में पानी लगा दो

   .... में पानी लगा दो

6. दिए गए शब्द संकेतों की सहायता से प्रत्येक के लिए तीन-तीन पंक्तियाँ लिखो।

(दाना, उड़, चीं-चीं)

1. .... ।
2. .... ।
3. .... ।

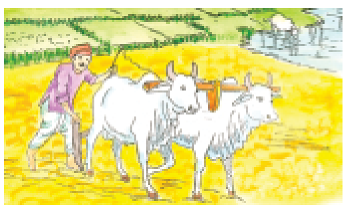

(खेत, गेहूँ, पौधे)

1. .... ।
2. .... ।
3. .... ।

7. रेखा खींचकर समान अर्थ वाले शब्दों को मिलाओ

खेत	जननी
पौधा	भ्राता
माँ	कृषि क्षेत्र
बेटा	काश्तकार
किसान	संध्या
चिड़िया	कनक
गेहूँ	बूटा
शाम	सुत
भाई	गौरेया

पाठ–3

मोर

वर्षा ऋतु में जब आकाश बादलों से ढक जाता है तो आपने खेतों में मोर को अपने रंग–बिरंगे पंख फैलाकर नाचते हुए अवश्य देखा होगा। वह अपनी खुशी नाचकर प्रकट करता है। इसकी सुंदरता को ध्यान में रखते हुए 1963 में इसे राष्ट्रीय पक्षी घोषित किया गया है। मोर भारत का ही नहीं, म्यांमार और कांगो का भी राष्ट्रीय पक्षी है।

भारत के पक्षी जगत में मोर सबसे अधिक सुंदर होता है। मोर और मोरनी के रंग–रूप में काफी अंतर होता है। मोरनी की अपेक्षा मोर अधिक सुंदर होता है। इसके सिर पर सुंदर कलगी होती है। इसकी गर्दन चमकीली और गहरे नीले रंग की होती है। इसके पंख लम्बे और रंगीन होते हैं। मोरनी का रंग भूरा होता है। उसका रंग मोर की तरह चमकीला और आकर्षक नहीं होता।

मोर को गर्मी और प्यास बहुत सताती है, इसलिए उसे नदी किनारे के क्षेत्रों या झील के किनारे रहना अधिक प्रिय है। परंतु उसे तैरना नहीं आता। बादलों के गरजने पर या बंदूक की आवाज़ पर वह ज़ोर–ज़ोर से कूकने लगता है।

मेंढक और साँप इसका प्रिय आहार हैं। आमतौर पर यह घास–फूस, दाने, बीज, कीड़े–मकौड़े आदि भी खाता है। जहाँ पर मोर रहते हैं वहाँ साँप नज़र नहीं आते। यह हानिकारक जीव–जंतुओं को खाकर सफाई का कार्य करता है। इस प्रकार मानव समाज के लिए यह एक उपयोगी पक्षी है।

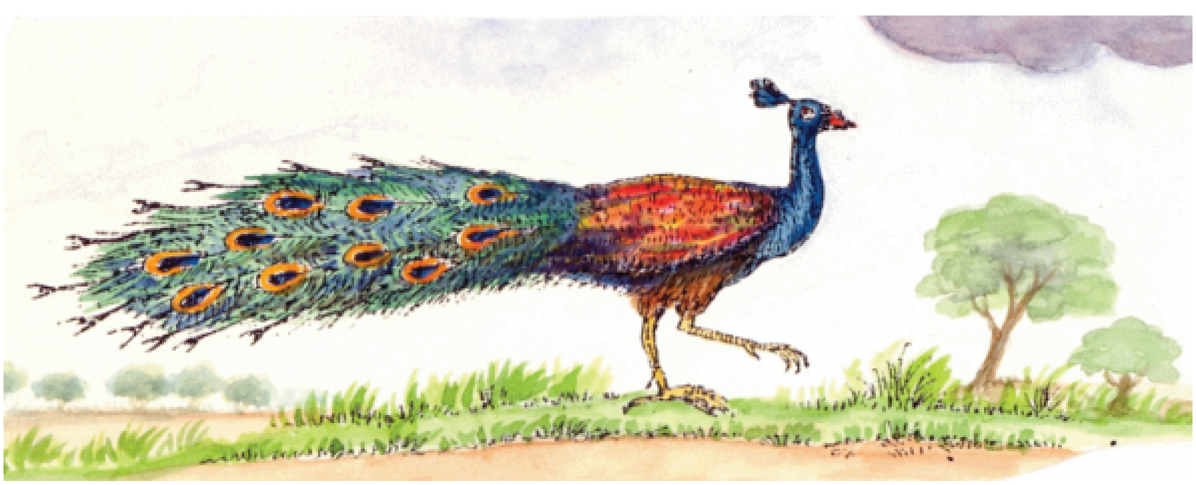

अन्य पक्षियों की तरह यह अपना घोंसला पेड़ पर नहीं बनाता। मोरनी अक्सर ज़मीन पर या झाड़ी में अंडे देती है।

जब यह मस्त होकर घंटों नाचता है तो इसके पंखों की छटा बहुत सुंदर लगती है लेकिन जब इसकी नज़र अपने पैरों पर पड़ती है तो वह निराश हो जाता है क्योंकि इसके पैर कुरूप होते हैं। मोर भारत के अधिकांश भागों में पाया जाता है। राजस्थान, ब्रजभूमि और चित्रकूट के आस-पास तो यह अधिक दिखाई देता है। भारत के अतिरिक्त श्रीलंका, बर्मा और अफ्रीका में भी ये काफी पाये जाते हैं। अफ्रीका का सफेद मोर तो संसार भर में प्रसिद्ध है। परतुं सुदंरता में भारतीय मोर सबसे अधिक सुंदर होता है।

राष्ट्रीय पक्षी होने के कारण भारत सरकार ने इसको पकड़ने, मारने और कैद करने पर रोक लगाई हुई है।

शब्दार्थ

जगत	=	संसार	हानिकारक	=	नुकसान पहुँचाने वाले
अपेक्षा	=	तुलना में	कुरूप	=	भद्दा

बताओ

1. मोर अपनी खुशी कैसे प्रकट करता है?
2. मोर और मोरनी के रंग-रूप में क्या अंतर होता है?
3. मोर को नदी या झील के किनारे रहना क्यों पसंद है?
4. मोर का प्रिय आहार क्या है?
5. मानव समाज के लिए यह उपयोगी कैसे है?
6. मोरनी अंडे कहाँ देती है?
7. भारत में मोर कहाँ-कहाँ पाये जाते हैं?

वाक्य बनाओ

राष्ट्रीय-पक्षी, सुंदर कलगी, रंगीन पंख, प्रिय आहार, रंग-रूप, जीव-जंतु

वाक्य पूरे करो

1. मोर के पंख .... और .... होते हैं।
2. बादलों के गरजने पर यह ज़ोर-ज़ोर से .... लगता है।
3. .... और .... इसका प्रिय आहार है।
4. इसके पैर .... होते हैं।
5. अफ़्रीका का .... मोर संसार भर में प्रसिद्ध है।

समान अर्थ वाले शब्द लिखो

बादल	=	....	पक्षी	=	....
पंख	=	....	पेड़	=	....
साँप	=	....	मेंढक	=	....
घोंसला	=	....	पैर	=	....
आकाश	=	....			

लिंग बदलो

मोर	=	मोरनी			
शेर	=	....	सिंह	=	....
ऊँट	=	....	हाथी	=	....

पढ़ो, समझो और लिखो

रंग = रंगीला

चमक = चमकीला

ज़हर = ज़हरीला

दिये गए शब्दों में से पुल्लिंग और स्त्रीलिंग शब्द छाँट कर अलग-अलग लिखो

मोर, सिर, बंदूक, साँप, कीड़े-मकौड़े, मोरनी, पक्षी, गर्दन, कलगी, पंख, आकाश, बादल, नदी, झील, मानव, दाने, घास-फूस, बीज, पेड़, घोंसला, झाड़ी, पैर।

पुल्लिंग शब्द	**स्त्रीलिंग शब्द**
मोर	मोरनी
....	....
....	....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

चित्र देखकर पाँच वाक्य लिखो

1. ....
2. ....
3. ....
4. ....
5. ....

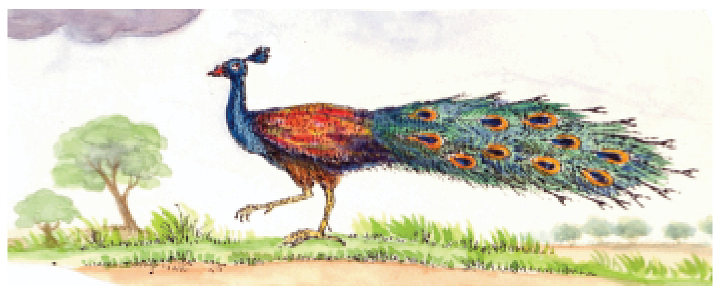

मोर है पक्षी प्यारा प्यारा
यही है राष्ट्रीय पक्षी हमारा

अध्यापन निर्देश :

1. अध्यापक बच्चों को यह भी बताये कि श्रीकृष्ण अपने माथे पर मोर पंख को मुकुट के रूप में लगाते थे।
2. मोर को मयूर, ताऊस और मुरैला आदि नामों से भी जाना जाता है।

पाठ–4

छुक–छुक करती आई रेल

रेलगाड़ी की आवाज़ सुनकर बच्चे खुश होकर दौड़े आये। इंजन की आवाज़ की परवाह किये बिना सभी निकट आ गये।

चुलबुली संतो बोली, गाड़ी जी..... गाड़ी जी तुम कितनी लम्बी हो। जल्दी खत्म ही नहीं होती।

''अरी पगली मैं तो टुकड़ों–टुकड़ों से बनी हूँ। मैं जब चाहूँ छोटी हो जाऊँ, जब चाहूँ लम्बी बन जाऊँ।''

पहले मैं भाप से चलती थी। ड्राइवर कोयला झोंकते–झोंकते परेशान हो जाता था। और मेरे मुँह से निकलने वाला धुआँ वातावरण को दूषित करता था। अब तो मेरा इंजन सुदंर और सुडौल बन गया है। आज मैं इतराती हूँ, बल खाती हूँ, हवा से बातें करती हूँ क्योंकि अब मैं डीज़ल व बिजली से चलती हूँ। तुम मेरा पुराना रूप कालका–शिमला मार्ग पर देख सकते हो।

''मैं भारत की शान हूँ। कश्मीर से कन्याकुमारी तक भारत को जोड़ती हूँ। रंग-रूप, जाति-धर्म, अमीर-ग़रीब का भेद त्याग मैं मानवता का धर्म फैलाती हूँ। दिन-रात बिना थके दौड़ती रहती हूँ।''

अच्छा.......... इतने लोगों से तुम परेशान नहीं होती, प्रशान्त ने पूछा।

नहीं बच्चो ! देशवासियों की सेवा करने में मैं अपने आप पर गर्व महसूस करती हूँ। हाँ, जब शरारती लोग मेरी सीटों को फाड़ते हैं, बल्ब तोड़ते हैं, बिना वजह ज़ंजीर खींचकर मुझे रोक लेते हैं, तब मुझे बहुत दुःख होता है। ऐसे लोग मुझे बिल्कुल पसंद नहीं।

गाड़ी जी, गाड़ी जी! हमारे घर के पास से कई बार ऐसी गाड़ियाँ भी गुज़रती हैं जिनमें कोई यात्री नहीं दिखाई देता। ऐसा क्यों? मीना ने पूछा।

बच्चो ! मेरा वह दूसरा रूप है, जिसे मालगाड़ी कहते हैं। इसमें मैं कोयला, लोहा, पेट्रोलियम, खाने-पीने का सामान और न जाने क्या-क्या अपने फौलादी सीने पर लादकर देश के कोने-कोने में पहुँचाती हूँ। फ़ौज की पलटनें जब मुझ पर सवार होकर सीमाओं की ओर जाती हैं तब मेरा सीना गर्व से फूल जाता है।

गाड़ी जी, गाड़ी जी, तुम्हारे सिर पर यह कलगी-सी क्या है? पार्वती ने पूछा।

अरे यह कलगीनुमा उपकरण बिजली की तारों से मेरा सम्पर्क करवाता है। तब मैं हवा से बातें करती हूँ। अरे ! अब तो मैट्रो का ज़माना आ गया है।

यह मैटरो-वैटरो क्या है? मधु ने पूछा।

मैटरो नहीं, 'मैट्रो रेल' शशि ने समझाया। ''पिछले दिनों शिब्बू और सुनील अपने चाचा के साथ दिल्ली गये थे। कहते हैं सारी गाड़ी एकदम ए.सी.। सर्दी में गर्म और गर्मी में एकदम ठंडी। और टिकट भी बहुत कम। पलक झपकते आती है, पलक झपकते गुम हो जाती है।''

''गाड़ी जी....... गाड़ी जी हमें भी सैर कराओ, अपनी गोद में बिठाओ।'' सुशीला ने कहा।

''क्या करूँ ! मज़बूर हूँ। समय और नियमों में बँधी हूँ। तुम्हें बैठाया और टिकट बाबू आ गया तो लेने के देने पड़ जायेंगे। फिर मेरा यह ठहराव भी नहीं है। अपने माता-

पिता या अध्यापक के साथ मेरे प्लेटफार्म पर आना। टिकट खिड़की से टिकट लेना। फिर जहाँ मन चाहे चल पड़ना।''

अचानक सीटी बजती है। अंतिम डिब्बे में एक आदमी सीटी बजाते हुए हरी झंडी दिखा रहा था। बच्चों ने पूछा, ''हमारा मज़ा किरकिरा करने यह कौन आ गया?''

''बच्चो, यह गार्ड बाबू है। इनके लाल झंडी दिखाने पर मैं ठहरती हूँ और हरी झंडी दिखाने पर चल पड़ती हूँ।''

बच्चो, देखो मुझे सिग्नल मिल गया है। अब मैं जा रही हूँ।

बच्चों ने हाथ हिलाकर उसे विदा किया।

शब्दार्थ

दूषित	=	दोषयुक्त, गंदा	फौलादी सीना	=	मज़बूत छाती
सुडौल	=	गठित शरीर वाला	उपकरण	=	औज़ार/यंत्र
ठहराव	=	रुकना	प्लेटफार्म	=	रेलवे स्टेशन पर गाड़ियों के ठहरने का स्थान
सिग्नल	=	इशारा	सम्पर्क	=	मेल

बताओ

1. पहले रेलगाड़ी किससे चलती थी?
2. रेलगाड़ी का पुराना रूप कहाँ देखा जा सकता है?
3. रेलगाड़ी एकता का संदेश कैसे देती है?
4. शरारती लोग रेलगाड़ी को क्या हानि पहुँचाते हैं?
5. मैट्रो रेल कैसी होती है?
6. हरी झंडी दिखाने वाले को क्या कहते हैं?
7. मालगाड़ी में क्या-क्या सामान ढोया जाता है?

वाक्य पूरे करो

1. मैं .... की शान हूँ।
2. तुम्हारे सिर पर यह .... -सी क्या है?

3. सारी गाड़ी एकदम .... ।

4. .... झंडी दिखाने पर ठहरती हूँ।

5. .... झंडी दिखाने पर चल पड़ती हूँ।

वाक्य बनाओ

हवा से बातें करना	=	बहुत तेज़ दौड़ना	....
सीना गर्व से फूल जाना	=	गौरव अनुभव करना	....
पलक झपकना	=	उसी क्षण, तत्काल	....
लेने के देने पड़ जाना	=	लाभ की बजाय हानि होना	....
मज़ा किरकिरा करना	=	खुशी में दुःख या	....
		पीड़ा की बात होना।	....

पढ़ो, समझो और लिखो

इतिहास +	इक	=	**ऐतिहासिक**	सुदंर + ता	=	**सुदंरता**
धर्म +	इक	=	....	मानव + ता	=	....
दिन +	इक	=	....	निकट +ता	=	....
विज्ञान +	इक	=	....	भारतीय + ता	=	....

रंग – रूप	=	**रंग और रूप**
जाति–धर्म	=	....
अमीर–ग़रीब	=	....
गर्मी–सर्दी	=	....
माता–पिता	=	....

विराम चिह्न पहचानो

मैं रेलगाड़ी हूँ ।

मैं रंग–रूप , जाति–धर्म , अमीर–गरीब का भेद नहीं मानती।

तुम्हारे सिर पर यह कलगी–सी क्या है?

अन्तर समझो

समान	=	बराबर	=	हम सब समान हैं।
सामान	=	चीज़ें	=	मैंने अपना सामान गाड़ी में रख लिया है।
सीना	=	छाती	=	देश सेवा करते हुए मेरा सीना गर्व से फूल जाता है।
सीना	=	सिलना	=	मैंने कपड़े सीना सीख लिया है।

समझो

टिकट खिड़की रेलगाड़ी टिकट बाबू मैट्रोगाड़ी रेल-भाड़ा

चित्र देखकर पाँच वाक्य लिखो

1. ....
2. ....
3. ....
4. ....
5. ....

ट्रेन है मेरे भारत की शान
मेरा भारत बड़ा महान

अध्यापन निर्देश : अध्यापक बच्चों को समझाये कि 1. भाषा में कई बार सीधी-सी बात को अनोखे ढंग से कहा जाता है। इस प्रकार प्रयोग किये गये शब्दों का विशेष अर्थ होता है। ऐसे शब्दों के समूह को 'मुहावरा' कहते हैं। 2. दो भाषाओं के शब्दों के मेल को 'संकर शब्द' कहते हैं। जैसे 'रेलगाड़ी' में 'रेल' अंग्रेज़ी भाषा का शब्द है और गाड़ी हिंदी भाषा का शब्द है। इसी प्रकार अन्य शब्द समझाये।

पाठ–5

कोयल

देखो, कोयल काली है पर
मीठी है इसकी बोली।
इसने ही तो कूक-कूक कर
आमों में मिसरी घोली।
कोयल ! कोयल ! सच बतलाओ,
क्या संदेशा लाई हो?
बहुत दिनों के बाद आज फिर
इस डाली पर आई हो।
क्या गाती हो? किसे बुलाती,
बतला दो कोयल रानी !
प्यासी धरती देख माँगती
हो क्या मेघों से पानी?

कोयल ! यह मिठास क्या तुमने
अपनी माँ से पाई है?
माँ ने ही क्या तुमको मीठी
बोली यह सिखलाई है?
डाल-डाल पर उड़ना, गाना,
जिसने तुम्हें सिखाया है।
सबसे मीठे-मीठे बोलो,
यह भी तुम्हें बताया है।
बहुत भली हो, तुमने माँ की,
बात सदा ही है मानी।
इसीलिए तो तुम कहलाती,
हो सब चिड़ियों की रानी।

शब्दार्थ

मिसरी (मिश्री) = मिठास, चीनी से बनी मिठाई

संदेशा	=	खबर	धरती	=	ज़मीन
मेघ	=	बादल	भली	=	अच्छी

बताओ

1. कोयल का रंग कैसा होता है?
2. कोयल की आवाज़ कैसी होती है?
3. कोयल ने अपनी माँ से क्या सीखा?
4. कोयल को चिड़ियों की रानी क्यों कहते हैं?
5. कोयल कहाँ आकर बैठी है?

समान तुक वाले शब्द लिखो

रानी	पानी	आई	....
घोली	....	काली	....

रेखा खींचकर सही जोड़े बनाओ

कोयल	घोली
मिसरी	बोली
मीठी	धरती
प्यासी	काली

इन पंक्तियों को पूरा करो

1. इसने ही तो .... कर
   आमों में मिसरी घोली।
2. .... पर उड़ना, गाना,
   जिसने तुम्हें सिखाया है।
3. सबसे .... बोलो
   यह भी तुम्हें बताया है।

दायीं ओर लिखे शब्दों में से बायीं ओर लिखे शब्द का सही अर्थ ढूँढकर उस पर गोला लगाओ

बोली	=	बात, आवाज़	खुश	=	उदास, प्रसन्न
डाली	=	टहनी, पेड़	मेघ	=	बादल, बिजली
सच	=	झूठ, सत्य	भली	=	अच्छी, बुरी
सदा	=	हमेशा, कभी-कभी	चिड़िया	=	कोयल, पक्षी

चित्रों के अनुसार बोलियों का मिलान कीजिए

कुकड़ूकूँ
कूक-कूक
काँव-काँव
चीं-चीं
टैं-टैं
क्वैक-क्वैक
गुटरगूं-गुटरगूं

मीठी बोली पर चार सरल वाक्य लिखो

1. .... 3. ....

2. .... 4. ....

बिंदुओं को मिलाओ और देखिए कौन सा पक्षी बनता है। उस पक्षी में रंग भरें।

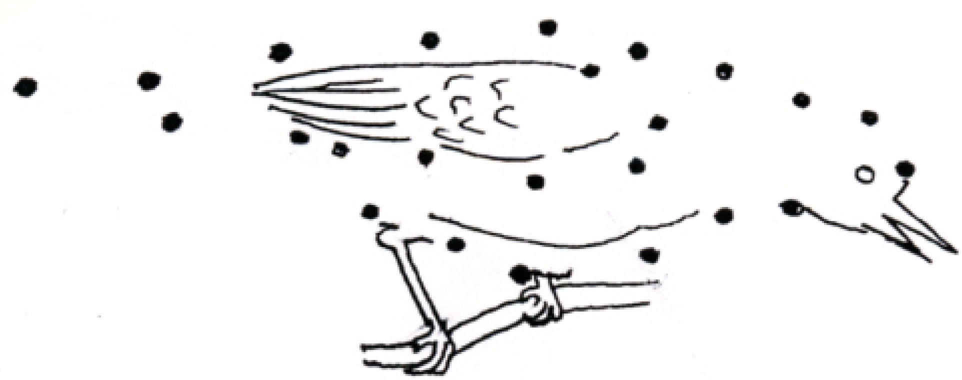

अंतर समझो

डाली : कोयल पेड़ की **डाली** पर बैठी है।
क्या आपने दूध में चीनी नहीं **डाली**?

बोली : मेरी **बोली** हिंदी है।
मैंने अध्यापक से यह बात **बोली**।

जानो

भारत में गाने वाले और पक्षी भी हैं। पपीहा, श्यामा, दोयल आदि किंतु स्वर साम्राज्ञी कोयल के आगे सभी की आवाज़ फीकी पड़ जाती है। इसे कोकिल भी कहते हैं। बसंत ऋतु आते ही कोयल का कूकना शुरू हो जाता है। आम के कुंजों में जब कोयल पूरी उमंग से गाती है तो सारा वातावरण संगीतमय बन जाता है। ऐसा लगता है कि कानों में अमृत वर्षा हो रही हो।

मीठी बोली कोयल की और
कड़वी बोली कौए की सुन
सभी एकदम जान जाते हैं .... दोनों के गुण।

पाठ-6

ऐनकू

'ऐनकू बई ऐनकू।'

'आ गया है ऐनकू'

'ऐनकू, बई ऐनकू।'

'आ गया है ऐनकू।'

रवि के कक्षा में प्रवेश करते ही एक शरारती बच्चा पहले ज़ोर-ज़ोर से बोलता और पीछे-पीछे सारी कक्षा के बच्चे उसी लय में बार-बार नारे से लगाते जाते। बिल्कुल उसी तरह जैसे चुनाव में विपक्षी दल को नारे लगा कर नीचा दिखाने की कोशिश की जा रही हो। दल तो सिर्फ दो ही थे एक दल में ऐनकू तथा दूसरे दल में कक्षा के सभी बच्चे।

अगर उसको ऐनक लगी है तो इसमें उसका क्या दोष? उसके तो सिर्फ ऐनक ही लगी है। पढ़ाई में, बुद्धि में वह कक्षा के किसी बच्चे से कम तो नहीं।

हाँ, यह बात अलग है कि कक्षा के और बच्चे अमीर घराने के हैं और वह एक मध्यम परिवार से संबंध रखता है। लेकिन अमीर होना ही तो कोई बड़ी बात नहीं। पैसे से ही कोई बड़ा नहीं बनता, बड़ा बनने के लिए गुण चाहिए।

रवि ने चुपचाप आगे वाली सीट पर बस्ता टिका दिया और बैठने ही लगा था। ये क्या? एक ही झटके में बस्ता दूर गिरा।

'अबे ऐनकू, यहाँ नहीं बैठना, यह मेरे दोस्त की सीट है, अभिषेक क्रोध से आँखें दिखा रहा था।'

कक्षा में एक भी बच्चा ऐसा नहीं था जो रवि को अपना दोस्त बना ले, उसे अपने साथ बैठा ले। इसलिए रवि ने अपना बस्ता उठाया और चुपचाप सबसे पीछे वाली सीट पर जा बैठा।

बरबस रवि की आँखों से अश्रुओं की धारा बहने लगी। इतने में बच्चों की आवाज़ सुनकर अध्यापिका भी कक्षा के अंदर तक आ गयी।

सभी बच्चे एक साथ बोले, ''गुड मार्निंग मैडम''

''गुड मार्निंग'' अध्यापिका ने मेज़ पर रजिस्टर रखते हुये कहा।

''आपकी कक्षा से इतना शोर कैसे आ रहा था? दफ़्तर तक आपकी आवाज़ पहुँच रही थी।''

सब चुप।

''मनीष, तुम बताओ क्या बात थी?'' एक बच्चे की ओर इशारा करते हुये टीचर ने कहा जो कि कक्षा का मॉनीटर था।

मनीष सहम-सा गया, उससे कुछ कहते न बना। अचानक टीचर की नज़र सबसे पीछे बैठे रवि पर पड़ी तो उसे रोते देख हैरान हो गई।

''रवि, क्या बात है? क्यों रो रहे हो?'' अध्यापिका ने रवि के पास जाते हुए पूछा।

इतना प्यार भरा अहसास पाकर रवि फफक पड़ा।

''इतना रो क्यों रहे हो रवि? किसी ने तुझे मारा है?''

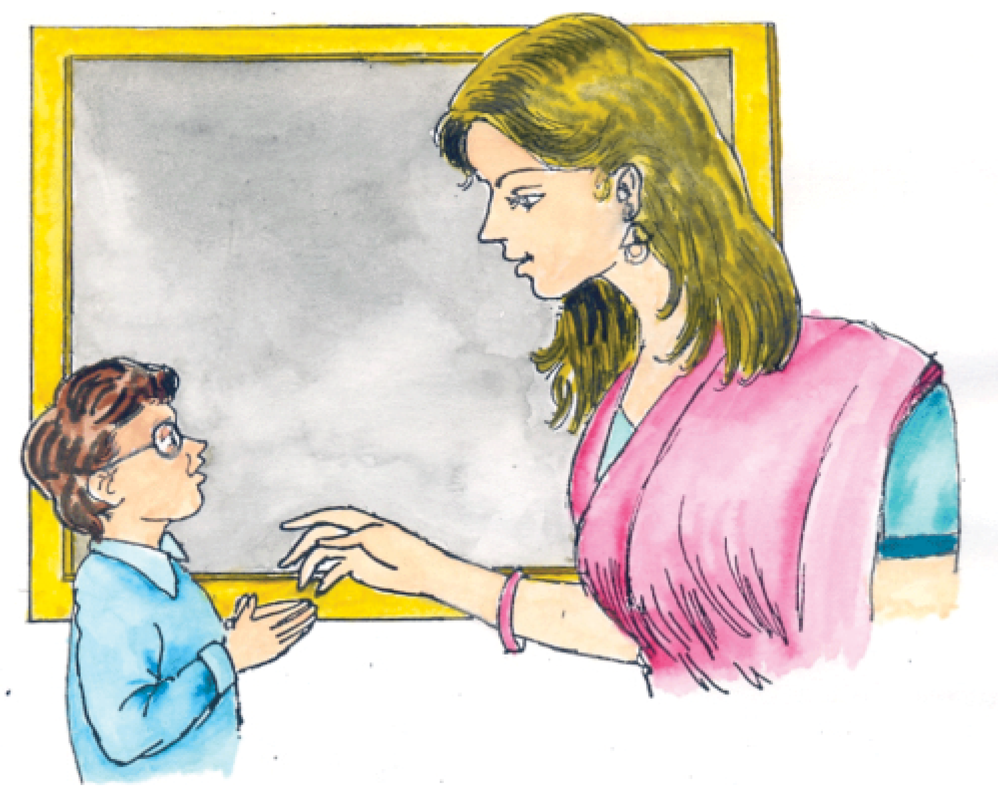

रवि को अपने साथ सटाते हुए अध्यापिका ने पूछा।

''सभी मुझे ऐनकू-ऐनकू कह कर चिढ़ाते हैं'' आँसुओं के बहाव को रोकते हुए रवि ने कहा।

''चल, मेरे साथ चल'' अपनी बाँहों में भरती हुई अध्यापिका उसे अपनी मेज़ तक ले गयी।

''तुम यहाँ बैठो मैं अभी आती हूँ।'' कहती हुई अध्यापिका कक्षा के कमरे से बाहर चली गयी।

''ओ रवि के बच्चे, यहाँ मेरे पास आ'' दादागिरी दिखाते हुए राकेश ने कहा।

रवि सहम-सा गया।

''तुझे सुना नहीं, मैंने क्या कहा?''

रवि अभी चलने को ही था कि अचानक मनीष ने टाँग अड़ा दी। रवि मुँह के बल गिरा। ऐनक दूर जा गिरी और चकनाचूर हो गई। सभी बच्चे तालियाँ बजाकर हँस रहे थे। इतने में अध्यापिका ने कक्षा में प्रवेश किया।

रवि उठने की कोशिश कर रहा था लेकिन उससे उठते नहीं बन रहा था। अध्यापिका ने दौड़कर उसे उठाया।

''ओह!'' इसके माथे से तो खून बह रहा है।

अध्यापिका ने अपने पर्स में से रूमाल निकाला और जहाँ से खून बह रहा था वहाँ टिका दिया। फिर अपने पर्स में से निकाल कर मरहम पट्टी कर दी और दवाई भी खाने को दी।

आज अगर अध्यापिका न होती तो न जाने रवि का क्या हाल होता।

अध्यापिका ने एक बैंच पर रवि को आराम करने के लिए लिटा दिया।

अब कक्षा में सन्नाटा छाया हुआ था।

'ये किस बच्चे की शरारत है?' एकाएक अध्यापिका की आवाज़ गूँजी।

चुप्पी।

''रवि, तुम ही बताओ तुम्हें किसने गिराया है?''

''मैडम, चलते हुए मेरा पाँव फिसल गया और मैं गिर गया।'' मासूमियत से भरा रवि का स्वर था।

''अच्छा बेटा गरम-गरम दूध पी लेना ठीक हो जाओगे।'' अध्यापिका ने दुलारते हुए कहा।

अध्यापिका ने कैंटीन से एक गिलास गरम-गरम दूध मँगवाया और रवि को पिला दिया।

''बेटा, आफिस में जाकर फोन कर आओ, मम्मी तुम्हें घर ले जायेगी।''

''मेरी मम्मी तो घर नहीं होती, पढ़ाने के लिए स्कूल चली जाती है।''

''घर में और कौन होता है।''

''मेरे दादा जी होते हैं, जो काफी बूढ़े हैं। वे मुझे लेने नहीं आ सकते। वैसे भी हमारे घर फोन नहीं है।''

''तो फिर कैसे करें?''

''पापा को बुला लेते हैं। वह फैक्टरी से आकर मुझे ले जायेंगे, लेकिन मुझे फोन नहीं करना आता।''

एक ज़ोरदार ठहाका कक्षा में गूँजा।

''चुप। तुम इतना हँस क्यों रहे हो?''

''मैडम यह तीसरी कक्षा में हो गया और इसे अभी तक फोन करना नहीं आता।'' एक बच्चे ने हँसी रोकते हुए कहा।

''तो इसमें हँसने की क्या बात है? देखो, मैं इतनी बड़ी हो गई हूँ और मुझे अभी तक अच्छी तरह फोन करना नहीं आता। यह तो फिर बहुत छोटा बच्चा है।'' सभी बच्चे आश्चर्य से एक दूसरे का मुँह देखने लगे।

''मैडम, यह कैसे हो सकता है कि आपको फोन न करना आता हो?'' राकेश ने हैरानी से पूछा।

''हाँ बेटा, मैं आपको पढ़ाने एक गाँव से आती हूँ और गाँवों में फोन बहुत कम होते हैं। मैंने भी अभी स्कूल में फोन करना सीखा है और रवि के घर भी फोन नहीं है इसलिए इसे भी फोन करना कैसे आता?''

''चलो मनीष, रवि के साथ फोन करने में इसकी मदद करो।''

रवि मनीष के साथ अपने पापा को फोन करने चला गया।

''बच्चो अपने साथियों की सदा मदद करनी चाहिये न कि उनका मज़ाक उड़ाना चाहिये। दूसरों की मदद करने वाला ही भगवान का रूप होता है।'' अध्यापिका कहती जा रही थी।

इतने में रवि और मनीष भी वापिस आ गये थे। ''रवि, आज के बाद तुम सबसे आगे बैठोगे। खुद मन लगाकर पढ़ना और इन सबको कक्षा में प्रथम आकर दिखाना। फिर किसी में भी इतनी हिम्मत न होगी कि तुम्हें तंग कर सके।'' ''रवि, तुम मेरे दोस्त बनोगे?'' मनीष ने कहा।

रवि ने हाँ में गर्दन हिला दी।

''और कौन-कौन रवि का दोस्त बनेगा?'' अध्यापिका ने कहा।

'मैं बनूँगा, मैं बनूँगा' कितने ही बच्चे अपनी-अपनी जगहों पर खड़े हो गये थे।

''मैं रवि का बैस्ट फ्रेंड बनूँगा'' राकेश ने रवि का हाथ अपने हाथ में लेते हुए कहा।

''मैडम आई. एम. सॉरी'' मैंने ही रवि को गिराया था। मैं ही इसकी ऐनक बनवा कर दूँगा। मेरे ही कारण इसका नुकसान हुआ। मनीष की आँखों से टप-टप आँसू टपकने लगे थे।

रवि ने मनीष को गले से लगा लिया, बरबस ही उसके होठों पर मुस्कान तैर गई। यह मुस्कान ही उसकी असली जीत की पहचान थी।

शब्दार्थ

ऐनकू = ऐनक लगाने वाले बच्चे को चिढ़ाने पर पड़ा नाम।

अश्रु = आँसू

बरबस = ज़बरदस्ती

अहसास = अनुभव होना।

बताओ

1. बच्चे रवि को क्या कहकर चिढ़ाते थे?
2. रवि कक्षा में सबसे पीछे वाली सीट पर जाकर क्यों बैठ गया?
3. अध्यापिका के पूछने पर रवि ने अपने रोने का क्या कारण बताया?
4. रवि की ऐनक कैसे टूट गई?
5. अध्यापिका ने रवि की देखभाल कैसे की?
6. रवि को फोन करना क्यों नहीं आता था?
7. अध्यापिका ने बच्चों को क्या समझाया?
8. मनीष की आँखों से आँसू क्यों टपकने लगे?

वाक्य बनाओ

नीचा दिखाना	= छोटा समझना	= ....
आँसुओं की धारा बहना	= लगातार रोना	= ....
फफक पड़ना	= रोने लग जाना	= ....
सहम जाना	= डर जाना	= ....
सन्नाटा छाना	= चुप्पी होना	= ....
होठों पर मुस्कान तैरना	= खुश होना	= ....
आँखें दिखाना	= डराना	= ....

मुँह के बल गिरना = अचानक ज़मीन पर गिरना = ...

किसने कहा

- ''आपकी कक्षा से इतना शोर कैसा आ रहा था।'' ....
- ''सभी मुझे ऐनकू ऐनकू कह कर चिढ़ाते हैं।'' ....
- ''ओह! इसके माथे से तो खून बह रहा है।'' ....
- ''मैं रवि का बैस्ट फ्रैंड बनूँगा।'' ....

विराम चिह्न लगाओ

बड़ा बनने के लिए गुण चाहिये

मनीष तुम बताओ क्या बात थी अध्यापक ने कहा

ओह! इसके माथे से खून बह रहा है

एक जैसे शब्दों से वाक्य बनाओ

ज़ोर-ज़ोर से = ...

पीछे-पीछे = ...

बार-बार = ...

गरम-गरम = ...

अक्षरों से नये शब्द बनाओ

ध्य = ...मध्यम...........

स्व = ...

स्ट = ...

न्ध = ...

च्च = ...

स्त = ...

शब्द में से शब्द बनाओ

सुनकर → सुन, कर

बोलता

आपकी

आराम

चुनाव

अध्यापन निर्देश : अध्यापक बच्चों को समझाये कि जब एक ही शब्द का दो बार प्रयोग हो तो ऐसे शब्द को 'पुनरुक्त शब्द' कहते हैं। ऐसा शब्द विशेष पर अधिक बल देने के लिये किया जाता है।

पाठ–7

बालक सुभाष

'जय हिंद'। बच्चो, जानते हो यह नारा किसने लगाया था? नेता सुभाष चंद्र बोस ने। उन्होंने ही बर्मा में आज़ाद हिंद फ़ौज की स्थापना की थी और देश के नवयुवकों से कहा था--

''तुम मुझे खून दो, मैं तुम्हें आज़ादी दूँगा।'' भारत को अंग्रेज़ों से आज़ाद कराने में उनका योगदान भुलाया नहीं जा सकता।

सच........ । बचपन में आप सबकी तरह नटखट, धमाचौकड़ी मचाने वाले, पर ज़िद्द के पक्के और निडर थे हमारे सुभाष। वे बहुत दयालु थे। जब भी कोई ग़रीब विद्यार्थी, साधु या ग़रीब दिखाई देता अपने वस्त्र तक दान कर देते। दूसरों के दु:ख उनसे देखे न जाते थे।

बचपन से ही धार्मिक स्वभाव की माँ, स्वामी रामतीर्थ परमहंस व विवेकानंद के विचारों से अत्यन्त प्रभावित। वे ईश्वर के बनाये इंसानों की सेवा करना ही भक्ति समझते थे। परंतु विदेशियों से अत्यन्त नफ़रत करते थे क्योंकि अंग्रेज़ भारतीयों से भेदभाव करते थे। एक बार भारतीयों की निंदा किये जाने पर कॉलेज के प्रिंसिपल से भिड़ गये थे।

अमीर पिता की संतान पर संयम गज़ब का था। उन्होंने अपनी ज़रूरतों को कम कर रखा था। उनका जीवन सादा और विचार ऊँचे थे। दीन-दु:खियों की सेवा के लिए तत्पर रहते थे। अभी चौथी कक्षा में ही थे कि पता चला साथ के गाँव में हैज़ा फैला है। बस नंगे पाँव घर में बिना बताये बरसात की अंधेरी रात में रोगियों की सेवा करने चल दिये। माता-पिता ने समझा कि सुभाष कहीं खो गया है। घर में मातम-सा छा गया। कुछ दिनों बाद जब चुपके से आकर उन्होंने माँ की आँखें ढक लीं, तब माँ ने सुभाष को सीने से लगा लिया।

सुभाष जी की मातृभाषा बंगाली थी। अंग्रेज़ी स्कूल से जब बंगाली स्कूल में दाखिल हुये वहाँ अंग्रेज़ी नहीं पढ़ाई जाती थी। एक बार इन्हें कक्षा में 'गाय' पर निबंध लिखने को कहा गया। वे बंगाली में अच्छा निबंध नहीं लिख पाये। अध्यापक और सहपाठियों ने इनकी खूब खिल्ली उड़ायी, उड़ायें भी क्यों न? अपनी मातृभाषा की अज्ञानता से लज्जित होना पड़ा, पर जिद्द के पक्के सोचा कि भारतीय होकर मातृभाषा में लेख नहीं लिख सके। उन्होंने बंगला भाषा का अध्ययन शुरू कर दिया और इतनी मेहनत की कि वार्षिक परीक्षा में प्रथम स्थान पर आये।

अपने अध्यापक बेनीमाधव से इनका अत्यंत स्नेह था। वे उनका बहुत सम्मान करते थे। उनके तबादले पर अंतिम व्याख्यान सुनकर वे रो पड़े। उनकी आँखों में आँसू देख अध्यापक की आँखों में आँसू आ गये।

उन्हें पढ़ाई और प्रकृति से अत्यंत प्यार था। अपनी किताबों के अतिरिक्त अन्य शिक्षाप्रद किताबें भी पढ़ते थे। अपने बंगले के सामने एक बगीचा लगा रखा था। जिसकी देखभाल जैसे पानी देना, गुड़ाई आदि स्वयं करते थे। सो ऐसे थे हमारे बालक सुभाष और बड़े होकर एक सहज, सरल जीवन वाले सम्मानीय नेता बने। आज राष्ट्र उनके प्रति नतमस्तक है।

शब्दार्थ

स्थापना	=	बनाना	नटखट	=	शरारती
व्याख्यान	=	भाषण	तत्पर	=	तैयार

बताओ

1. 'जय हिंद' का नारा किसने दिया था?
2. आज़ाद हिंद फ़ौज की स्थापना कहाँ हुई थी?
3. सुभाष चंद्र बोस ने नवयुवकों से क्या कहा?
4. बालक सुभाष की मातृभाषा क्या थी?
5. बालक सुभाष के सद्गुण लिखो।

वाक्य बनाओ

खिल्ली उड़ाना = मज़ाक करना = ...

लज्जित होना = शर्म महसूस करना = ...

जिद्द का पक्का = दृढ़ निश्चय वाला = ...

मातम छाना = दु:ख होना = ...

सीने से लगाना = प्यार करना = ...

विपरीत शब्दों का मिलान करो

आज़ाद	नफरत
ग़रीब	निंदा
दु:ख	गुलाम
प्यार	अमीर
प्रशंसा	सुख

संयम	कठिन
ज्ञान	अपमान
सम्मान	असंयम
सरल	अज्ञान

गुब्बारे में से सही शब्द चुनकर अनेक शब्दों के स्थान पर एक शब्द लिखो

पढ़ाई करने वाला = विद्यार्थी

दूसरे देश का = ...

भारत में रहने वाला = ...

बीमार रहने वाला = ...

साथ पढ़ने वाला = ...

अक्षरों से नये शब्द बनाओ

हिन्दी	=	न्द	=	....
चन्द्र	=	न्द्र	=	....
स्थापना	=	स्थ	=	....
तुम्हें	=	म्ह	=	....
जिद्द	=	द्द	=	....
अध्यापक	=	ध्य	=	....

करो

दिये गये चित्रों को देखो और बताओ इन्होंने कौन-सा नारा दिया?

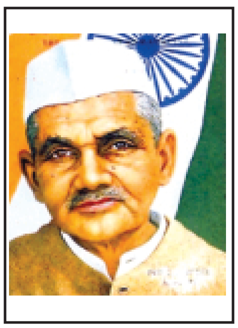
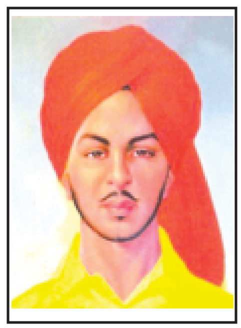
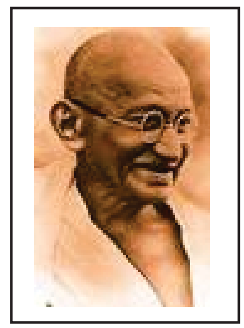

पाठ-8

एक खास बाग – जलियाँवाला बाग

बच्चो, अमृतसर कभी न कभी ज़रूर गये होंगे। वहाँ प्रसिद्ध स्वर्ण मंदिर में माथा नवाया होगा। इसके बिल्कुल पास ही थोड़ी संकरी गलियों में से होते हुए जलियाँवाला बाग़ आता है। इसे अभी तक न देखने गये हों, तो इस बार जाओ तो ज़रूर इस बाग़ में जाना। यह कोई मामूली बाग़ नहीं है। यह बाग़ देशभक्ति का संदेश देता है।

बच्चो, जलियाँवाला बाग़ में 13 अप्रैल, 1919 में अंग्रेज़ अधिकारी ब्रिगेडियर जनरल रेगीनेल्ड डायर के आदेश पर 90 अंग्रेज़ सिपाहियों ने निहत्थी भीड़ पर 15 मिनट तक 1400 गोलियाँ बरसा दी थीं। इसमें 379 लोग मारे गये थे जबकि 1100 लोग घायल हो गये थे। यही नहीं जलियाँवाला बाग़ के छोटे से कुएँ से 120 शव निकाले गये थे। ये लोग हमारे अनाम शहीद हैं। इन्हें प्रणाम करने व श्रद्धाँजलि अर्पित करने जलियाँवाला बाग़ ज़रूर जाना।

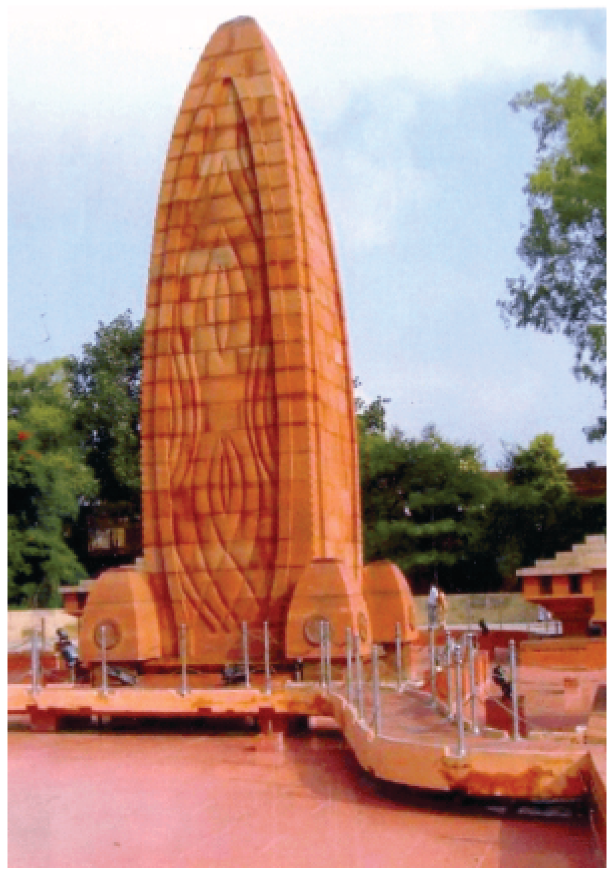

इन लोगों ने कोई गुनाह किया था तो केवल इतना ही कि अंग्रेज़ सरकार द्वारा बनायी नीतियों का विरोध किया था। अपने नेताओं सैफुद्दीन किचलू व सत्यपाल को छुड़वाने के लिए प्रदर्शन किया था। इससे हिंसा भड़क गयी थी। अंग्रेज़ सरकार ने अपनी बनाई इन नीतियों को लागू करने का फैसला किया।

इस बाग़ में इतने बड़े नरसंहार के बाद सन् 1920 में स्मारक बनाने का प्रस्ताव रखा गया और सन् 1923 में यह जगह मोल ली गयी। अमेरिकन शिल्पी ने इस स्मारक का डिज़ाइन तैयार किया। सन् 1961 में 13 अप्रैल को उस समय देश के राष्ट्रपति

डॉ. राजेन्द्र प्रसाद व प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरू ने इस स्मारक को लोकर्पित किया। यहाँ हर समय शहीदों की स्मृति में ज्योति प्रज्वलित होती रहती है।

बाग में ध्यान से दीवारों को देखना। आज भी गोलियों के निशान सुरक्षित रखे गये हैं। इस बाग़ में शाँत व चुपचाप जाना क्योंकि शहीदों को प्रणाम करने जा रहे हो। है न खास जलियाँवाला बाग़।

शब्दार्थ

स्वर्ण मंदिर = सिक्खों का प्रसिद्ध धार्मिक स्थान
अनाम = जिसका नाम या ख्याति न हो
निहत्थी = जिसके हाथ में कोई हथियार न हो
शहीद = देश के लिए अपने को कुर्बान करना
श्रद्धाँजलि = आदरणीय व्यक्ति के प्रति श्रद्धा प्रकट करने के लिए कहे गये शब्द
नर-संहार = मनुष्यों का कत्ल होना
स्मारक = किसी की याद को बनाये रखने के लिए बनाया गया स्तम्भ आदि
संकरी = तंग
प्रज्वलित = जलती हुई

बताओ

1. अमृतसर के दो प्रसिद्ध ऐतिहासिक स्थानों के नाम लिखो।
2. जलियाँवाला बाग़ में अंग्रेज़ अधिकारियों ने गोलियाँ कब बरसायी थीं?
3. अंग्रेज़ अधिकारियों ने गोलियाँ क्यों चलायी थीं?
4. इस नर-संहार में कितने लोग मारे गये और कितने घायल हुये?
5. बाग़ में स्थित कुएँ से कितने शव निकाले गये?
6. जलियाँवाले बाग़ में प्रदर्शन क्यों किया गया था?
7. जलियाँवाले बाग़ को स्मारक का दर्जा किसने और कब दिया?

वाक्य बनाओ

स्वर्ण मंदिर = ...
निहत्थी = ...
श्रद्धाँजलि = ...

नरसंहार	=	....
प्रज्वलित	=	....
स्मृति	=	....

जोड़कर नये शब्द बनाओ

प्र	+	**दर्शन**	=	**प्रदर्शन**	अमृत	+	सर	=	....
प्र	+	सिद्ध	=	....	देश	+	भक्ति	=	....
सु	+	रक्षित	=	....	प्रधान	+	मंत्री	=	....
सं	+	देश	=	....	राष्ट्र	+	पति	=	....
नि	+	शान	=	....	लोक	+	अर्पित	=	....
आ	+	देश	=	....	अ	+	हिंसा	=	....

शब्द में से शब्द बनाओ

मामूली   जनरल   सरकार   हमारे   निशान

पढ़ो, समझो और लिखो

बाग़	=	**बाग़ों**	शहीद	=	....
दीवार	=	....	अंग्रेज़	=	....
निशान	=	....	कुआँ	=	....
स्मारक	=	....	घायल	=	....

करो

1. अमृतसर के प्रसिद्ध स्थानों की जानकारी प्राप्त करो।
2. अपने अध्यापक से जलियाँवाला बाग़ की घटना की जानकारी प्राप्त करो।
3. जलियाँवाले बाग़ को देखने के लिए अपने माता-पिता से आग्रह करो।

जलियाँवाले बाग़ में दिखती हैं,
अमर शहीदों की कुर्बानियाँ।
मर मिट जायेंगे हम,
पर मिटने न देंगे उनकी निशानियाँ।

पाठ–9

पेड़

खड़े–खड़े मुस्काते पेड़।
कहीं न आते–जाते पेड़॥

जंगल हो या तड़क–भड़क हो,
पर्वत, घाटी, खुली सड़क हो।
किंतु नहीं घबराते पेड़।
सैनिक से डट जाते पेड़॥

हरे, गुलाबी गहने पहने,
सीख गए सब आतप सहने,
इनकी मस्ती के क्या कहने।

खिलना हमें सिखाते पेड़।
सुंदर दृश्य दिखाते पेड़॥

कई तरह के फल उपजाते,
खुशबू वाले फूल खिलाते,
लेकिन थोड़ा-सा झुक जाते।
सज्जनता के नाते पेड़।
फूले नहीं समाते पेड़॥

कड़ी धूप में बनते साया,
सारा जीवन सरस बनाया,
पेड़ों की है अद्भुत काया।
पहले वर्षा लाते पेड़।
फिर छतरी बन जाते पेड़॥

शब्दार्थ

जंगल	=	वन	पर्वत	=	पहाड़
घाटी	=	दो पहाड़ों के बीच की नीची ज़मीन	आतप	=	गर्मी
दृश्य	=	नज़ारा	सज्जनता	=	शराफत
साया	=	छाया	सरस	=	रस से युक्त, मधुर
काया	=	शरीर	अद्भुत	=	अनोखा

बताओ

1. पेड़ खड़े-खड़े कैसे दिखते हैं?
2. पेड़ किस-किस स्थिति में भी नहीं घबराते?
3. पेड़ों की मस्ती कैसे दिखाई देती है?
4. पेड़ों का स्वभाव क्या है?
5. पेड़ इस कविता के द्वारा क्या सीख दे रहे हैं?

वाक्य बनाओ

सैनिक = ...

गहने = ...

खुशबू = ...

वर्षा = ...

छतरी = ...

डट जाना = ...

फूले नहीं समाना = ...

कविता की पंक्तियाँ पूरी करो

कड़ी धूप में बनते .... ,
सारा जीवन .... बनाया।
पेड़ों की है............... काया,
पहले .... लाते पेड़।
फिर .... बन जाते पेड़॥

बायीं ओर कुछ शब्द दिये गये हैं। दायीं ओर दिये गये पेड़ के चित्र में से उनके समान अर्थ वाले शब्द ढूँढकर लिखो

पेड़	=	....	बादल	=	....
जंगल	=	....	बिजली	=	....
पर्वत	=	....	पुष्प	=	....
वर्षा	=	....	खुशबू	=	....

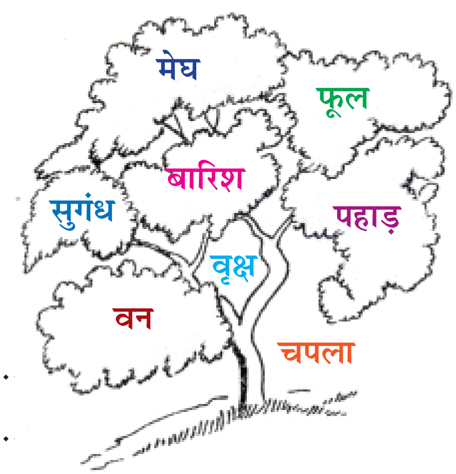

विलोम शब्द लिखो

सरस	=	....	खुली	=	....
सुंदर	=	....	धूप	=	....

'सज्जनता' शब्द सत् + जन + ता जोड़कर बना है। 'ता' लगाकर चार नये शब्द बनाओ

सुंदर + ता = ... + ता = ...

दयालु + ता = ... + ता = ...

करो

1. पेड़ हमें क्या-क्या देते हैं? सूची बनाओ।

2. नीचे दिये चौखानों में दस पेड़ों के नाम छिपे हैं, उन्हें ढूँढकर लिखो।

जा	ब	र	ग	द	अ
मु	शी	आ	ड़	नी	म
न	श	म	अ	ना	रू
भ	म	ख	ना	रि	द
ट	ड	छ	र	य	क
ज	श	पी	प	ल	च

1 ....
2 ....
3 ....
4 ....
5 ....
6 ....
7 ....
8 ....
9 ....
10 ....

पाठ–10

चौराहे का दीया

दीवाली आने वाली है। इसलिए बचपन की दीवाली में खोया हुआ हूँ। दीवाली से कुछ दिन पहले ही मिठाइयों व फलों की दुकानें सज जातीं। कब मिठाइयाँ खरीदने जायेंगे? यह सवाल करते-करते दीवाली का दिन भी आ जाता। इधर मिठाइयाँ खाने के लिए मुँह से लार टपकती, उधर दादी माँ के आदेश जान खाये रहते। दीवाली के दिन सुबह से घर में लाये गये मिठाई के डिब्बे व फलों के टोकरे मानो हम बच्चों को चिढ़ाते रहते। शाम तक उनकी महक हमें तड़पा डालती, पर दादी माँ हमारा सारा उत्साह काफ़ूर कर देतीं, यह कहते हुए कि पूजा से पहले कुछ नहीं मिलेगा। चाहे रोओ, चाहे हँसो!

हम जीभ पर ताला लगाए पूजा होने का इंतज़ार करते, पर पूजा करने से पहले ही दादी माँ कई दीयों में सरसों का तेल डालकर जब हमें समझाने लगतीं कि यह दीया मंदिर में जलाना, यह दीया गुरुद्वारे में और एक दीया किसी चौराहे पर और.... हम ऊब जाते। ठीक है, ठीक है, सब दीये जला आयेंगे, कहकर जाने की जल्दबाजी मचाने लगते। हमें लौट कर मिलने वाले फल व मिठाइयाँ लुभा रहे होते। उस पर दादी माँ की व्याख्याएँ खत्म होने का नाम ही न लेतीं। यही नहीं, वे किसी जिद्दी, सनकी अध्यापिका की तरह हमसे प्रश्न करने लगतीं-- सिर्फ दीये जलाने से क्या होगा? समझ में भी कुछ आया?

हम नालायक़ बच्चों की तरह हार मान कर आग्रह करते-दादी माँ, आप ही बताइए।

ये दीये इसलिए जलाए जाते हैं ताकि मंदिर और गुरुद्वारे से तुम एक-सी रोशनी, एक-सा ज्ञान हासिल कर सको। दोनों में... बल्कि सभी धर्मों में विश्वास रखो... समझे? और चौराहे का दीया किस लिए दादी माँ?

हम खीझकर पूछ लेते। चौराहे पर दीये को जलाना हमें बेकार का सिरदर्द लगता। ज़रा-सी हवा के झोंके से ही तो बुझ जायेगा। कोई राहगीर ठोकर मारकर तोड़ डालेगा। कोई वाहन ऊपर से चकनाचूर कर देगा।

दादी माँ ज़रा भी विचलित नहीं होतीं और मुस्कराते हुए समझातीं- मेरे भोले बच्चो! चौराहे का दीया सबसे ज्यादा ज़रूरी है। इससे भटकने वाले मुसाफिरों को मंज़िल मिल सकती है और मंदिर-गुरुद्वारे को जोड़ने वाली एक ही ज्योति की पहचान भी।

शब्दार्थ

काफ़ूर = उड़ जाना

सनकी = धुन, दीवानगी

वाहन = सवारी के काम आने वाला

चौराहा = चार रास्ते जहाँ मिलते हों।

राहगीर = पैदल चलने वाला

बताओ

1. दीवाली के दिन बच्चों को किन वस्तुओं का चाव अधिक रहता है?
2. दादी माँ मिठाई और फल खाने को क्यों मना करती थी?
3. दादी माँ ने कहाँ-कहाँ दीये जलाने का आदेश दिया?
4. चौराहे पर दीया जलाना लेखक को बेकार क्यों लगता?
5. दादी माँ के अनुसार चौराहे पर दीया जलाना क्यों ज़रूरी है?

इन विशेष शब्दों के अर्थ समझते हुए वाक्य बनाओ

मुँह से लार टपकना = किसी वस्तु को देखकर मन में खाने की इच्छा होना

उत्साह काफ़ूर होना = हौसला ढह जाना

जीभ पर ताला लगना = मन को काबू में रखना

ऊब जाना = काम में मन न लगना

सिरदर्द लगना = झंझट लगना

पढ़ो, समझो और लिखो

मिठाई = मिठाइयाँ = मिठाइयों

दादी = दादियाँ = दादियों

दीया = दीये = दीयों

बच्चा = बच्चे = बच्चों

टोकरा = टोकरे = टोकरों

चौराहा = चौराहे = चौराहों

डिब्बा = डिब्बे = डिब्बों

वाक्य बनाओ

मंदिर, गुरुद्वारा, महक, नालायक, विचलित, ज्योति

'ना' और 'अ' अक्षर लगाकर विपरीत शब्द बनाओ

ना + लायक = ... अ + ज्ञान = ...

ना + समझ = ... अ + धर्म = ...

बायीं और दीये के चित्र में से दिये गये शब्दों के विपरीत शब्द ढूँढकर लिखो

दिन = ...रात....

अंधकार = ...

सुबह = ...

एक = ...

बेकार = ...

हार = ...

रोना = ...

सवाल = ...

दिये गये शब्द - जोड़ों के अर्थ दे दिये गये हैं। शब्द के अर्थ को समझते हुए वाक्य बनाओ

दीया = दीपक = हमनें चौराहे पर दीया जलाया।

दिया = देना = दादी माँ ने गरीबों को दान दिया।

दिन = दिवस = ...

दीन = असहाय = ...

हंस = एक पक्षी = ...

हँस = हँसना = ...

जान = प्राण = ...

जान = पता लगना = ...

मान = इज्जत = ...

मान = मान जाना = ...

खोया = दूध से बनी वस्तु/मिठाई= ....

खोया = गुम हो जाना= ....

मिल = कारखाना = ...

मिल = मिलना = ...

मील = सड़क पर दूरी मापने का एक पैमाना = ...

दिये गये शब्दों का मिलान करो

बच्चा	मुस्कराहट
बूढ़ा	भोलापन
मुस्कराना	महक
भोला	बचपन
महकना	बुढ़ापा

इन शब्दों के स्थान पर एक शब्द लिखो

जहाँ चार राह मिलते हों = **चौराहा**

सिक्खों का पूजा का स्थान = ...

हिंदुओं का पूजा का स्थान = ...

मुसलमानों का पूजा का स्थान = ...

ईसाईयों का पूजा का स्थान = ...

दिये गए चित्र को ध्यान से देखो। दीवाली पर पाँच वाक्य लिखो।

1. ....
2. ....
3. ....
4. ....
5. ....

अध्यापन निर्देश : अध्यापक बच्चों को ऊपर दिये गये बहुवचन रूपों को समझाते हुए बताये कि 'मिठाई' शब्द का बहुवचन मिठाइयाँ होगा। (दीर्घ के स्थान पर ह्रस्व) किंतु जब इसे वाक्य में विभक्ति चिह्न (का, के, की, ने आदि) के साथ प्रयोग किया जाता है तो इसका रूप बदलकर 'मिठाइयों' बन जाता है। उदाहरण: हम मिठाइयों की दुकान पर गये। इसी तरह अन्य शब्दों के बहुवचन रूप समझाये जायें।

पाठ–11

रहना ज़रा संभल के....

पात्र परिचय :- दादा : बरगद का पेड़

पिपलू : पीपल का पेड़

निम्मी : नीम का पेड़

तुलसी : तुलसी का पौधा

नदी किनारे बड़-दादा अपनी बड़ी-बड़ी पत्तियों को लहरा-लहरा कर अपनी खुशी प्रकट कर रहे थे। निम्मी से रहा न गया। हँसते हुए दादा से बोली :

निम्मी : दादा जी, आज कितना खुशी का अवसर है।

दादा : सचमुच बेटी, मैं तो आज फूला नहीं समा रहा, महीनों बीत जाते हैं ऐसी चहल-पहल देखने को।

निम्मी : दद्दू, हमारी मज़बूत डालियों पर युवतियों ने झूला डाला है, उनकी हँसी से मेरा मन झूम रहा है।

दादा : अरी बिटिया, कभी मेरी गोद में नित मेले होते थे। पंचायतों के फैसले, खेल-मेले, बड़े-बूढ़ों की शिकवा-शिकायतें सुनते-सुनते सैकड़ों वर्ष की उम्र बचपन-सी रहती थी।

पिपलू : अरे वाह! दादी-पोती में क्या गपशप हो रही है?

निम्मी : अरे भैया, आज खुशी का दिन है। दद्दू अपनी पुरानी बातें बता रहे हैं।

पिपलू : सच बहना, कितने सुखी थे हम सब। इस नगरीकरण व बढ़ती जनसंख्या ने हम पेड़-पौधों का अस्तित्व ही खतरे में डाल दिया है।

तुलसी : सच चच्चू, मुझे वे दिन नहीं भूलते, जब हम सबकी पूजा होती थी। हम सबकी आँखों के तारे थे। खेत-खलिहान, घर-आँगन की रौनक थे हम।

दादा : आँखों के तारे क्यों न हो? हम मानव को जीवनदायिनी ऑक्सीजन देते हैं, वातावरण को शुद्ध करते हैं।

तुलसी : जी दद्दू, आज मनुष्य कितना स्वार्थी हो गया है।

दादा : हम मानव को सुख देते हैं। अरे, पहले तो मेरे पत्तों से बनी पत्तलों पर बड़ी-बड़ी दावतें और भोज कराते बड़ा आनंद आता था। पत्तल बनाने वालों को धन भी मिलता था।

निम्मी : हाँ दद्दू....अब मुई प्लास्टिक अपनी चिकनी गोरी चमड़ी पर इतराती है, सबको अपने जाल में फँसा कर दूषित करती फिरती है और नासमझ लोग इसकी ओर ही लपकते हैं।

तुलसी : अरे दद्दू, जूठी पत्तलें तो गलकर खाद बन जाती हैं जिससे धरती उपजाऊ बन जाती है। तुम्हारी झब्बेदार तनों से लटकती जड़..... जो धरती से लग पुनः तना बन जाती है। ऑक्सीजन भी तो तुम सर्वाधिक देते हो।

पिपलू : अरे, तुम्हारी निम्मी दीदी क्या कम गुणकारी है, यह रक्त-विकार औषधि का खजाना है। चमड़ी रोगों के तो यह छक्के छुड़ा देती है। इसकी निबौलियों से साबुन, तेल व कई दवाइयाँ बनती हैं।

दादा : इसकी कोमल शाखाएँ दातुन के रूप में प्रयोग की जाती हैं। सूखी पत्तियाँ गर्म कपड़ों और अनाज में कीटनाशक के रूप में काम आती हैं।

निम्मी : पिपलू भैया भी तो पूज्य हैं, लोग इनके चरणों में दीपक जलाते हैं, इसे काटना पाप समझते हैं।

दादा : अरे निम्मी, छुटकी तुलसी गुणों से भरपूर पवित्रता की मूर्ति है। कोई भी पावन कार्य इसकी पत्तियों के बिना अधूरा माना जाता है।

पिपलू : लोग सर्दी-जुकाम, खाँसी या बुखार में इसकी पत्तियों का रस निकाल कर शहद मिलाकर घर में दवाई बना लेते हैं। मुझे देखो अंधविश्वासी लोग रात को मेरे पास आते हुए घबराते हैं, कहते हैं- मुझ पर भूत रहते हैं।

दादा : अरे चुप, भूत-वूत भी कुछ होता है क्या। अरे कुछ पेड़ों से रात को कार्बन डाइऑक्साइड निकलती है, तब लोग इतने पढ़े-लिखे तो थे नहीं, सो इसी तरह की बातें बनाते थे।

तुलसी : अरे दद्दू! ये देखो बच्चे हमारी बातें सुन रहे हैं।

निम्मी : अरे जाने दो......बच्चे हैं, अक्ल के कच्चे हैं।

दादा : न.....न.....न.....बेटी ये बच्चे ही धरती पर अच्छे हैं, मन के सच्चे हैं, जिद्द के पक्के हैं। इन्होंने ही हमें बचाना है, फुलवारी में सजाना है।

सब मिलकर: बच्चो! हमको रखना याद
हमसे है जीवन आबाद।

शब्दार्थ

पंचायत	=	पंचों की मंडली	नगरीकरण	=	शहरों का बसना
अस्तित्व	=	विदयमान होना	जीवनदायिनी	=	जीवन देने वाली
स्वार्थी	=	मतलबी	पत्तल	=	पत्तों का पात्र जिसमें भोजन परोसा जाता है
सर्वाधिक	=	सबसे अधिक			
कीटनाशक	=	कीटाणुओं को नष्ट करने वाली दवा	निबौलियाँ	=	नीम का फल या उसका बीज
			रक्त विकार	=	खून के रोग
पावन	=	पवित्र	औषधि	=	दवाई

बताओ

1. बड़ दादा अपनी खुशी कैसे प्रकट कर रहे थे?
2. पेड़-पौधों का अस्तित्व क्यों खतरे में पड़ गया है?
3. पेड़-पौधों से हमें क्या लाभ हैं?
4. पत्तलों का क्या उपयोग होता है?
5. नीम गुणकारी कैसे है?
6. तुलसी के पत्तें कैसे लाभकारी हैं?

वाक्य पूरे करो

मेरी मज़बूत डालियों पर युवतियों ने ....डाला है।

हम मानव को .... ऑक्सीजन देते हैं।

तुम्हारी झब्बेदार जड़ धरती से लग पुनः ....बन जाती है।

नीम रक्त-विकार औषधि का ....है।

छुटकी तुलसी .... की मूर्ति है।

वाक्य बनाओ

फूले नहीं समाना	= बहुत खुश होना	=	....
आँखों के तारे	= बहुत प्यारे	=	....
जाल में फँसाना	= बंधन में डालना	=	....
अक्ल का कच्चा	= बुद्धू, मूर्ख	=	....
जिद्द का पक्का	= दृढ़ इरादा	=	....

विराम चिह्न लगाओ

अरे वाह दादा पोती में क्या गपशप हो रही है

अरे तुम्हारी निम्मी दीदी क्या कम गुणकारी है

बेटी ये बच्चे ही धरती पर अच्छे हैं मन के सच्चे हैं जिद्द के पक्के हैं

दिये गये शब्दों के विलोम शब्द गोले में से ढूँढकर सही स्थान पर लिखो

1. जीवन = ...
2. उजाड़ = ...
3. पढ़ना = ...
4. गर्मी = ...
5. पाप = ...
6. गुण = ...
7. समझदार = ...
8. सुखी = ...
9. खुशी = ...
10. दिन = ...
11. पुरानी = ...
12. शुद्ध = ...

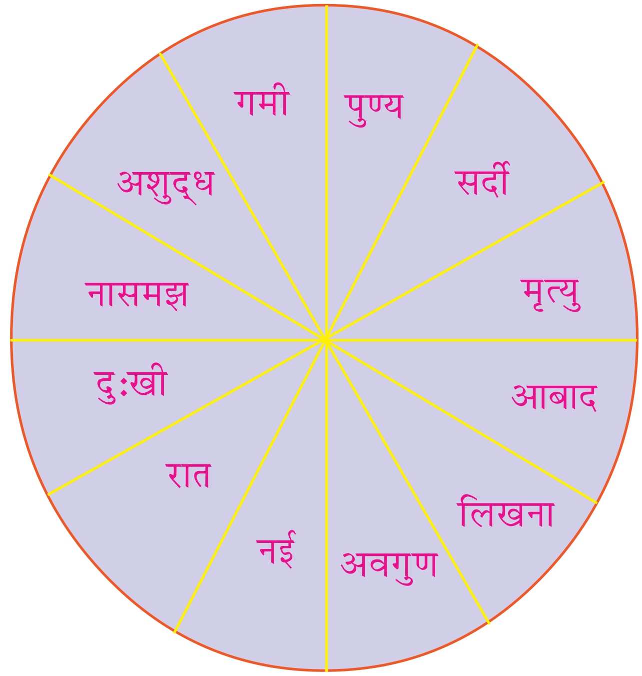

नये शब्द बनाओ

पत्ती = त्त = ...रत्ती......
निम्मी = म्म = ...
चच्चू = च्च = ...
पक्का = क्क = ...
झब्बेदार = ब्ब = ...
जिद्द = द्द = ...

श्रुत लेख

हम मानव को जीवनदायिनी ऑक्सीजन देते हैं। कुछ पेड़ों से रात में कार्बन डाइऑक्साइड निकलती है। बच्चो हमको रखना याद हमसे है जीवन आबाद।

करो

पेड़ों पर नारे लिखकर कक्षा में लगाओ।
पेड़ों की रक्षा करने का व्रत लो।
इस पाठ का अभिनय सही वेशभूषा धारण कर करो।

सम्बन्ध जोड़ो

दादा	फूफा
मामा	चाचा
चाची	बहन
बुआ	मौसी
भाई	दादी
मौसा	मामी

अध्यापन निर्देश :- अध्यापक बच्चों को समझाये कि जब किसी शब्द में एक अक्षर आधा और दूसरा वही अक्षर पूरा हो तो, ऐसे शब्दों को 'द्वित्व शब्द' कहते हैं। जैसे 'पत्ती' में एक 'त्' आधा और उसके बाद 'त' पूरा है। इसी प्रकार अन्य शब्द लेकर समझाये।

पाठ–12

एडीसन

उदय को नई नई बातें जानने का शौक था। रात को खाना खाने के बाद वह रोज़ दादा जी के कमरे में जाता और उनके पाँव दबा कर ढेरों बातें करता। दादा जी की बताई बातों को वह बड़े गौर से सुनता था। उसे दादा जी का साथ बहुत अच्छा लगता।

आज उदय ज्यों ही दादा जी के कमरे में पहुँचा तो एकदम बिजली चली गयी। कमरे में अंधेरा छा गया।

दादा जी ने पूछा,"क्या तुमने कभी सोचा कि बिजली का बल्ब किसने बनाया?"

उदय : कभी सोचा ही नहीं।

दादा जी : बल्ब बनाने वाले का नाम था– थामस एलवा एडीसन। वह अमेरिका का रहने वाला था।

उदय : उसने बल्ब कैसे बना डाला?

दादा जी : वह बचपन से ही विचारशील था। घर में वह काम में इतना मग्न रहता कि माँ खाना कमरे में दे जाती थी किंतु वह खाना वैसे ही पड़ा रहता। कक्षा में भी वह अपने ही विचारों में खोया रहता। इन बातों से एडीसन के अध्यापक उसे बुद्धू बालक समझते। लेकिन उसकी माँ उसे बुद्धिमान समझती थी। वह सब को कहती कि मेरा बेटा एक दिन बड़ा व्यक्ति बनेगा। माँ के इसी विश्वास से एडीसन को उत्साह मिलता और वह अपनी खोज में लगा रहता।

उदय : वह प्रयोग करने के लिए पैसे कहाँ से लाता था, दादा जी?

दादा जी : बेटा! वह बारह वर्ष की आयु से ही रेलगाड़ी में अखबार बेचने लग गया था। इसके अतिरिक्त वह सब्ज़ी आदि बेचकर भी पैसे कमाता था। वह जो पैसा बचाता वही अपनी खोजों में लगा देता।

उदय : तो क्या वह इतना होशियार व परिश्रमी था?

दादा जी : वह होशियार व परिश्रमी ही नहीं बल्कि धुन का भी पक्का था। वह दिन में बीस-बीस घंटे काम करता था। आराम करना तो वह जानता ही नहीं था। लगातार और अधिक परिश्रम करने के कारण ही उसे सफलता मिली।

उदय : तो क्या बिजली की खोज भी एडीसन ने ही की थी?

दादा जी : नहीं, बिजली की खोज तो इससे पहले हो चुकी थी। किंतु बिजली को प्रकाश के रूप में बदलने का आविष्कार एडीसन ने 27 जनवरी 1880 को किया।

उदय : बिजली आ गयी- बिजली आ गयी- कमरा चमक उठा। दादा जी, इस समय तो आप रेडियो पर समाचार सुनते हैं। क्या रेडियो चला दूँ?

दादा जी : हाँ, हाँ, अवश्य।

(उदय रेडियो चला देता है)

दादाजी : बेटा, ये जो रेडियो चल रहा है, इसका पहला रूप ग्रामोफोन हुआ करता था।

उदय : दादा जी! वही ग्रामोफोन जिस पर आप काला रिकार्ड चलाकार गीत व भजन सुनते हैं।

दादा जी : हाँ, हाँ वही। इससे पहले सिनेमा में भी केवल चलती फिरती मूक तस्वीरें हुआ करती थीं। एडीसन ने ही इनमें आवाज़ भरी।

उदय : क्या एडीसन ने सारे सफल प्रयोग ही किए, दादा जी?

दादा जी : नहीं बेटा! वह हज़ार से भी अधिक प्रयोगों में असफल होने के बाद ही सफलता प्राप्त कर सके। बेटा! खास बात यह है कि उनका यह दृढ़ संकल्प था कि वह सब आविष्कार मानवता की भलाई के लिए करेंगे।

उदय : दादा जी क्या मैं उनसे मिल सकता हूँ?

दादा जी : नहीं, बेटा थामस एडीसन का जन्म 11 फरवरी 1847 ई. को हुआ और 18 अक्तूबर 1931 ई. में उस महान वैज्ञानिक का देहावसान हो गया। परंतु उनके द्वारा बनाया गया बल्ब आज भी चारों तरफ रोशनी फैला रहा है।

अगर तुम उनसे मिलना चाहते हो तो अपने आप में परिश्रम की भावना, असफलता पर भी धैर्य न छोड़ना एवं वैज्ञानिक दृष्टिकोण का विकास करो। यही उन्हें सच्ची श्रद्धाँजलि होगी।

उदय : (दादा जी के चरण स्पर्श करते हुए) मुझे आशीर्वाद दीजिए।

दादा जी : तथास्तु।

शब्दार्थ

स्वभाव	=	आदत	संकल्प	=	प्रण
विचारशील	=	विचारों में मग्न	मग्न	=	तल्लीन
उत्साह	=	हौसला	आविष्कार	=	खोज
ग्रामोफोन	=	एक यंत्र जिसमें शब्द ध्वनि भरकर जब चाहे प्राय: ठीक उसी रूप में सुन सकते हैं।			

मूक	=	मौन	तथास्तु	=	ऐसा ही हो
दृष्टिकोण	=	देखने-सोचने का पहलू	देहावसान	=	मृत्यु, देहांत

बताओ

1. बल्ब का आविष्कार किसने किया और उसका जन्म कब हुआ?
2. थामस एडीसन कहाँ का रहने वाला था?
3. थामस एडीसन का स्वभाव कैसा था?
4. खोज करने के लिए वह पैसा कहाँ से लाता था?
5. थामस एडीसन की माँ उसे कैसा बालक समझती थी?
6. थामस एडीसन की मृत्यु कब हुई?

समान अर्थ वाले शब्दों को चुनकर सही जगह लिखो

प्रतिदिन, मेहनत, समझदार, ज़्यादा, पसंद, समाचार-पत्र, चित्र, मज़बूत, हौसला

शौक — पसंद
रोज़
अखबार
परिश्रम
तसवीर
धैर्य
बुद्धिमान
दृढ़
अधिक

विपरीत अर्थ वाले वाक्यों का मिलान करो।

वह मूर्ख बालक है।	वह धैर्यहीन बालक है।
वह परिश्रमी बालक है।	वह कामचोर बालक है।
वह काम में ध्यान लगाने वाला बालक है।	वह आलसी बालक है।
वह धैर्यवान बालक है।	वह सफल बालक है।
वह असफल बालक है।	वह बुद्धिमान बालक है।

शब्द में से अलग-अलग अक्षरों और मात्राओं के प्रयोग से नए शब्द बनते हैं। देखो

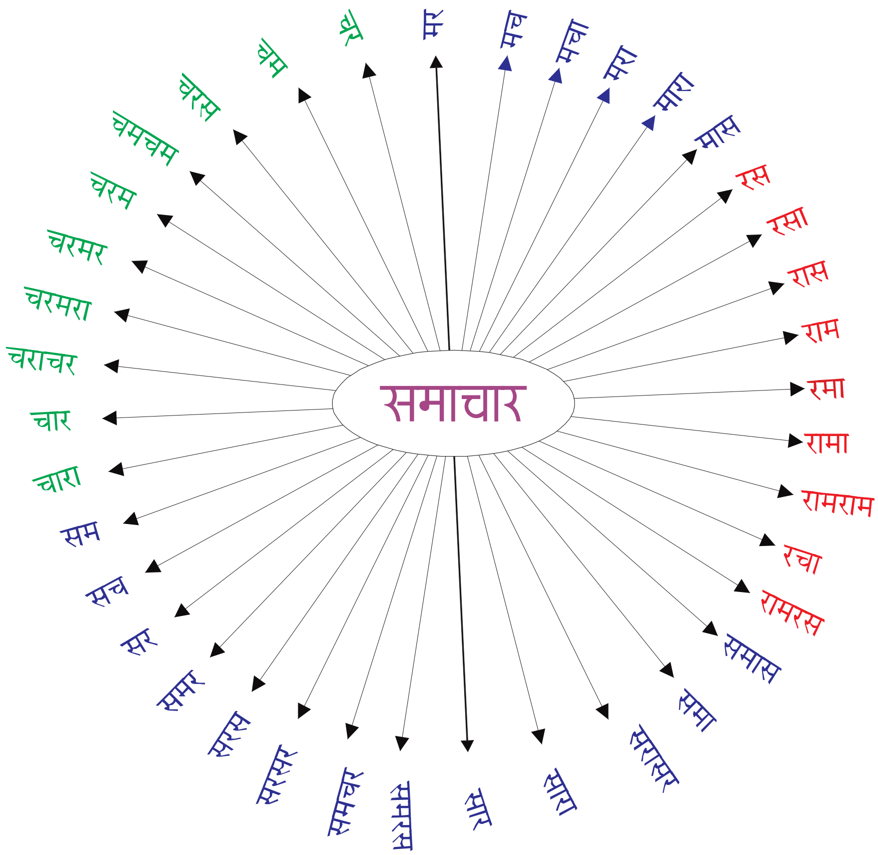

ऊपर दिए गए उदाहरण के आधार पर शब्दों में से नए शब्द बनाओ :

सफलता, मानवता, देहावसान, विचारशील

संयुक्त अक्षर से बने शब्द पाठ में से चुनकर लिखो

प् + र	= प्र	**प्रयोग**
ल् + ब	= ल्ब	....
न् + ध	= न्ध	....
ग् + न	= ग्न	....
ध् + य	= ध्य	....
क् + य	= क्य	....
ट् + र	= ट्र	....
ष् + ट	= ष्ट	....
द् + व	= द्व	....

पाठ–13

किसान

नहीं हुआ है अभी सवेरा
पूरब की लाली पहचान
चिड़ियों के जगने से पहले
खाट छोड़ उठ गया किसान।

खिला-पिलाकर, बैलों को ले
करने चला खेत पर काम।
नहीं कभी त्योहार, न छुट्टी
है उसको आराम हराम।

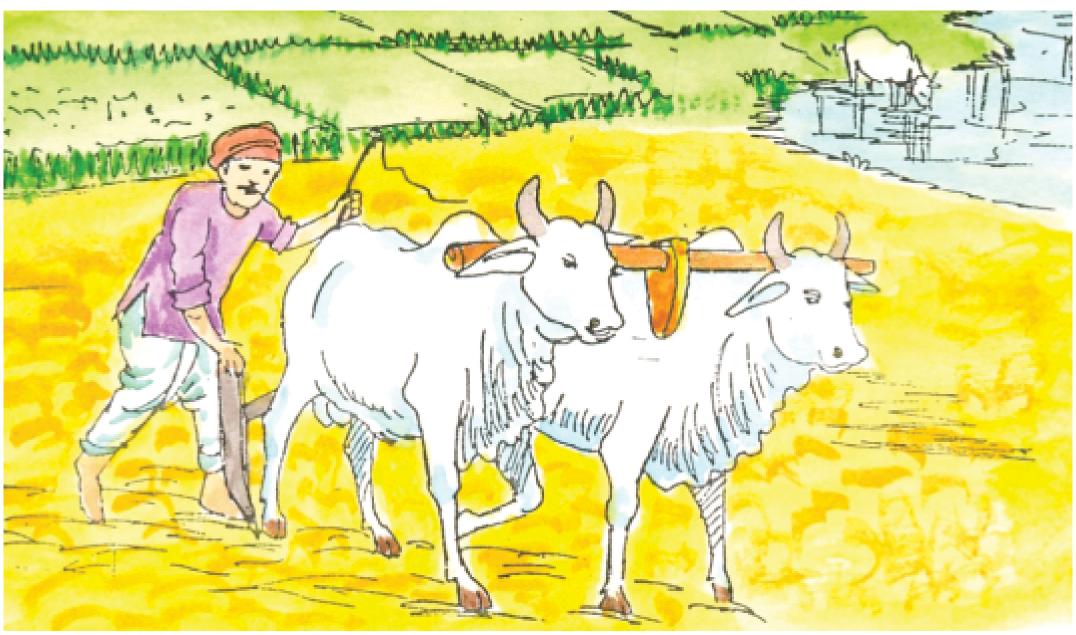

गरम-गरम लू चलती सन-सन
धरती जलती तवा समान
तब भी करता काम खेत पर
बिना किए आराम किसान।

बादल गरज रहे गड़-गड़-गड़
बिजली चमक रही चम-चम।
मूसलधार बरसता पानी
ज़रा न रुकता लेता दम।

हाथ-पाँव ठिठुरे जाते हैं
घर से बाहर निकले कौन?
फिर भी आग जला, खेतों की
रखवाली करता वह मौन।

है किसान को चैन कहाँ, वह
करता रहता हरदम काम।
सोचा नहीं कभी भी उसने
घर पर रह करना आराम।

शब्दार्थ

पूरब	=	पूर्व दिशा, जिसमें सूर्य उगता है।	मौन	=	चुपचाप
खाट	=	चारपाई	लू	=	बहुत गर्म हवा
हरदम	=	हमेशा, हर समय			
मूसलधार	=	बहुत अधिक लगातार तेज़ बारिश होना			

बताओ

1. किसान कब उठ जाता है?
2. किसान की दिनचर्या क्या है?
3. गर्मियों में धरती की क्या दशा होती है?
4. सर्दियों में किसान अपने खेतों की रखवाली कैसे करता है?
5. किसान को चैन क्यों नहीं मिलता?

पंक्तियाँ पूरी करो

1. चिड़ियों के जगने से पहले

   ....

2. नहीं कभी त्योहार, न ....
है उसको आराम..................

3. फिर भी आग जला, खेतों की
....

सही अर्थ ढूँढो

नीचे लिखे (क) और (ख) वाक्यों को पढ़ो और उसके आगे दिए गए सही अर्थ वाले खाने (बॉक्स) पर सही (✓) का निशान लगाओ–

(क) **धरती जलती तवा समान**

धरती बहुत गरम हो जाती है। | धरती पर आग जलने लगती है।

(ख) **हाथ-पाँव ठिठुरे जाते हैं।**

हाथ पाँव काम करना बंद कर देते हैं। | बहुत सर्दी लगती है।

किसका संबंध किसके साथ है। इनके जवाब बैल में छिपे हैं। उन्हें ढूँढो और सही जगह पर लिखो

किसका सम्बन्ध	**किससे**
किसान	खेत
बादल	....
धरती	....
मूसलाधार	....
बिजली	....
पूरब	....
सरदी	....

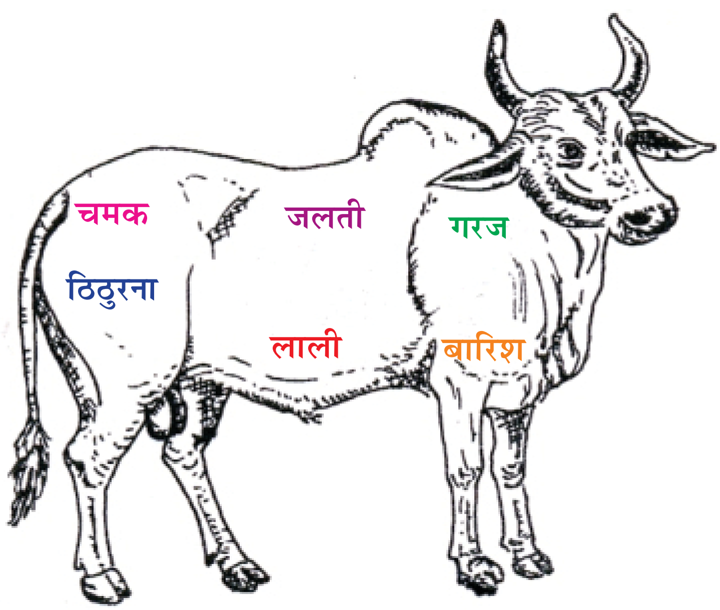

शब्दों के तीन-तीन समान अर्थ वाले शब्द बहते हुए पानी में दिए गए हैं, उन्हें ढूँढकर सही जगह लिखो

शब्द		समान अर्थ वाले शब्द		
खाट	:	शय्या	चारपाई	पलंग
बिजली	:	....	....	....
आग	:	....	....	....
धरती	:	....	....	....
पानी	:	....	....	....
कमल	:	....	....	....
बादल	:	....	....	....
समुद्र	:	....	....	....

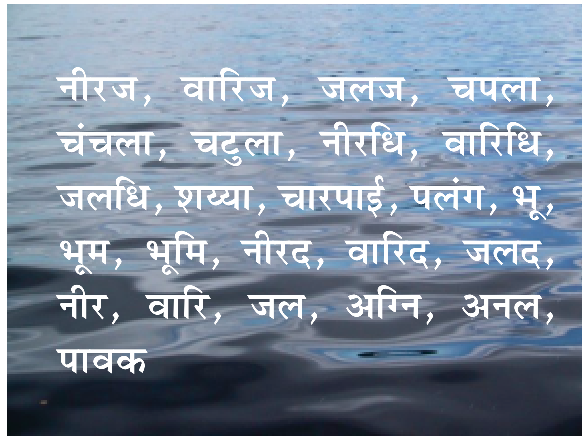

क्या आप दिशाओं के नाम जानते हैं? यदि आप नहीं जानते तो अपने अध्यापक/अभिभावक से जानकारी प्राप्त करके नीचे बने चित्र में लिखो।

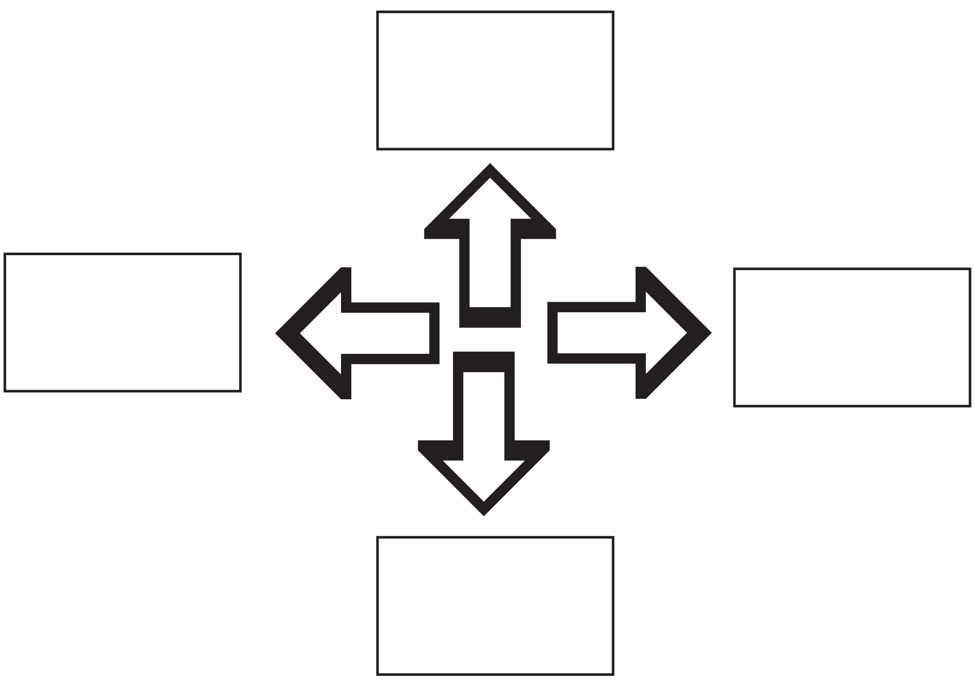

पाठ–14

रास्ते का पत्थर

एक राजा था। उसे अपनी प्रजा से बहुत प्यार था। वह प्रजा की भलाई का सदा ध्यान रखता था। राजा दयालु और न्यायप्रिय भी था।

एक दिन प्रातःकाल राजा भ्रमण के लिए निकला। अचानक उसे ठोकर लगी। उसने देखा कि रास्ते में पत्थर पड़ा है। कई लोग उसी रास्ते से आते जाते थे। राजा ने सोचा न जाने यह पत्थर कितने दिन से यहाँ पड़ा है। देखता हूँ, इसे कौन यहाँ से हटाता है और राजा पास ही एक पेड़ के पीछे छिप गया।

थोड़ी देर में राजा को एक किसान दिखाई दिया। वह अपना हल–बैल लेकर उसी रास्ते पर आ रहा था। किसान ने पत्थर को देखा और अपने बैलों को मोड़कर आगे निकल गया।

किसान के जाने के बाद एक ग्वाला डिब्बे में दूध लेकर उधर से निकला। उसने पत्थर नहीं देखा और ठोकर खाकर गिर पड़ा। ग्वाले के घुटने पर चोट लगी और सारा दूध बह गया। वह बड़ी मुश्किल से उठा और बड़बड़ाता हुआ बोला, रास्ते में इतना बड़ा पत्थर पड़ा हुआ है और कोई उसे हटाता नहीं। मेरा इतना दूध गिर गया, अब मैं ग्राहकों को क्या दूँगा?

ग्वाला लंगड़ाता हुआ अपने रास्ते चला गया। उसने भी पत्थर नहीं हटाया। जैसे ही राजा पेड़ के पीछे से निकला, उसे घोड़े की टाप सुनाई दी। वह फिर पेड़ के पीछे छिप गया।

इतने में घोड़ा पत्थर के पास आ गया। राजा ने देखा, घोड़े पर एक सिपाही बैठा है । वह मस्ती से गा रहा है। अचानक घोड़े को पत्थर से ठोकर लगी। घोड़ा पीछे हटा। सिपाही गिरते–गिरते बचा। उसने नीचे देखा और ऊँचे स्वर में बोला, ''मैं कई दिन से इस पत्थर को यहाँ पड़ा हुआ देख रहा हूँ, पर कोई इसे हटाता नहीं। यहाँ के लोग बहुत आलसी हैं।''

सिपाही ने अपना घोड़ा आगे बढ़ाया और दूर निकल गया।

कुछ ही देर में एक बूढ़ा आदमी अपने सिर पर फलों की टोकरी लिए आया और पत्थर से ठोकर खाकर गिर पड़ा। उसके सारे फल रास्ते में बिखर गए। एक लड़का दौड़ता हुआ आया और बूढ़े को उठाते हुए बोला, कहीं चोट तो नहीं लगी?

''नहीं बेटा, पर मेरे फल.........'' बूढ़े ने कहा।

''आप यहीं रुकिए, मैं अभी फल उठाकर टोकरी में रख देता हूँ।'' लड़के ने कहा।

उसने सभी फल उठाकर वृद्ध की टोकरी में रख दिये। बालक को आशीर्वाद देते हुए वृद्ध चला गया। लड़के ने इधर-उधर देखा और फिर रास्ते से पत्थर हटाने लगा। पत्थर थोड़ा-सा हिला और फिर अपनी जगह पर आ गया। लड़के ने फिर प्रयत्न किया पर पत्थर नहीं हिला। उसने इधर-उधर देखा और फिर पत्थर को हटाने का प्रयत्न करने लगा। अचानक पत्थर हिल गया। लड़के ने देखा कि एक आदमी उसकी सहायता कर रहा है। वह राजा ही था। दोनों ने मिलकर ज़ोर लगाया और पत्थर को रास्ते से हटाकर एक ओर कर दिया।

राजा ने पूछा,'' बेटा, तुम कौन हो?''

लड़के ने कहा, ''मैं गाँव की पाठशाला के अध्यापक का बेटा शंकर हूँ।''

दूसरे दिन शंकर पाठशाला पहुँचा। उसके मुख्य अध्यापक ने सभी विद्यार्थियों के सामने उसकी प्रशंसा की। उन्होंने बताया कि शंकर को राजा ने पुरस्कार दिया है।

शब्दार्थ

दयालु	=	दूसरों पर दया करने वाला	ग्राहक	=	खरीददार, खरीदने वाला
न्यायप्रिय	=	न्याय से प्यार करने वाला	आशीर्वाद	=	आशीष
भ्रमण	=	सैर	प्रशंसा	=	तारीफ
टाप	=	घोड़े के पैरों की आवाज़			
मुख्य	=	प्रधान, बड़ा			

बताओ

1. राजा पेड़ के पीछे क्यों छिप गया?
2. किसान ने पत्थर देखकर क्या किया?
3. लड़का पहले पत्थर क्यों नहीं हटा सका?
4. पत्थर रास्ते से कैसे हटा?
5. राजा ने लड़के को इनाम क्यों दिया?

किसने कहा? किससे कहा? क्यों कहा?

1. ''देखता हूँ, इसे कौन हटाता है?''
2. ''यहाँ के लोग बहुत आलसी हैं।''
3. ''बाबा, कहीं चोट तो नहीं लगी?''
4. ''बेटा, तुम कौन हो?''

पढ़ो, समझो और लिखो

(क)			(ख)		
न्यायप्रिय	=	**न्याय+प्रिय**	भला	=	**भलाई**
राजकुमार	=	....	बुरा	=	....
राजमहल	=	....	लम्बा	=	....
राष्ट्रपति	=	....	चौड़ा	=	....
पाठशाला	=	....	गहरा	=	....

श्रुतलेख

प्रजा	भ्रमण	न्यायप्रिय	भलाई	विद्यार्थियों	आशीर्वाद
प्रातः	पुरस्कार	अध्यापक	प्रशंसा	पत्थर	वृद्ध

शब्दों के विपरीत शब्द सामने बने घड़े में दिये गये हैं। घड़े में से विपरीत शब्द ढूँढकर सही जगह लिखो

भलाई	बुराई
दयालु	....
पीछे	....
प्रात:काल	....
मुश्किल	....
रुकिए	....
वृद्ध	....
आशीर्वाद	....
प्रशंसा	....
पुरस्कार	....

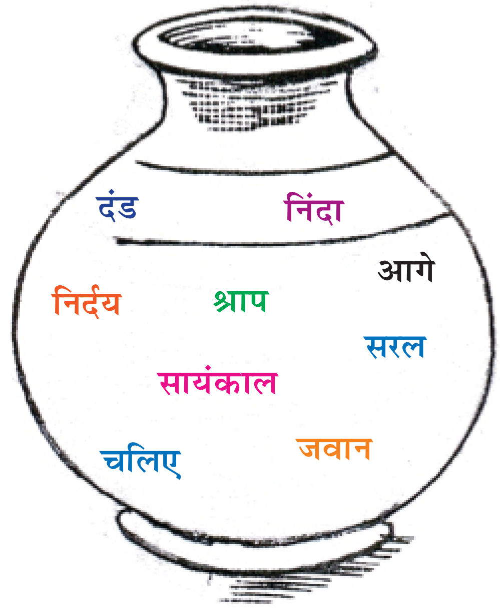

वाक्यों को पाठ के आधार पर शुद्ध करके लिखो

- थोड़ी देर में किसान को एक राजा दिखाई दिया।
- अचानक पत्थर को घोड़े से ठोकर लगी।
- वृद्ध का आशीर्वाद देते हुए बालक चला गया।
- एक बूढ़ा दौड़ता हुआ आया और लड़के को उठाते हुए बोला, कहीं चोट तो नहीं लगी।
- दूसरे दिन शंकर अस्पताल पहुँचा।
- राजा लंगड़ाता हुआ अपने रास्ते चला गया।

शब्दों के दो-दो छोटे और शब्द बनायें

मोड़कर

बड़बड़ाता — बड़ा, बड़बड़ा

सुनाई

सहायता

पाठ में आए इन संयुक्त अक्षरों से एक-एक शब्द बनाओ

प् + र = प्र → प्रजा   स् + व = स्व → ....

भ् + र = भ्र → ....   प् + य = प्य → ....

ग् + र = ग्र → .... स् + त = स्त → ....

ग् + व= ग्व → .... द् + ध = द्ध → ....

पाठ में आए इन संयुक्त अक्षरों को छाँटकर अलग करके लिखो

प्रात : → प्र वृद्ध : → ....

पत्थर : → .... पुरस्कार : → ....

मस्ती : → .... क्या : → ....

सही शब्दों पर (✓) लगाओ

उसने देखा की/कि रास्ते में पत्थर पड़ा है।

बूढ़ा आदमी अपने सिर पर फलों कि/की टोकरी लिए आया।

उसने पत्थर नहीं देखा और/ओर ठोकर खाकर गिर पड़ा।

उन्होंने पत्थर को रास्ते से हटाकर एक और/ओर कर दिया।

अनेक शब्दों के लिए एक शब्द लिखो

सुबह का समय	प्रात:काल
खेतीबाड़ी करने वाला	-------
जहाँ विद्यार्थियों को पढ़ना-लिखना सिखाया जाता है	-------
स्कूल का प्रधान अध्यापक	-------
जो पढ़ना-लिखना सिखाता है	-------
दूसरों पर दया करने वाला	-------
जो निकम्मा और सुस्त हो	-------
जो आसान न हो	-------
दूध दुहने वाला	-------
घोड़े पर सवार	-------

घुड़सवार
कठिन
ग्वाला
आलसी
अध्यापक
प्रधानाध्यापक
किसान
दयालु
पाठशाला

अभिनय करो

इस कहानी के ग्वाला तथा वृद्ध वाले अंशों का अभिनय करो।

पाठ–15

झंडा ऊँचा रहे हमारा

विजयी विश्व! तिरंगा प्यारा॥
झंडा ऊँचा रहे हमारा॥

प्रत्येक देश का अपना एक झंडा होता है। हमारे देश के झंडे का नाम तिरंगा है। इस झंडे में तीन रंग की बराबर अनुपात की पट्टियाँ हैं। सबसे ऊपर की पट्टी का रंग केसरी है। यह रंग वीरता और त्याग का सूचक है। यह रंग हमें उन शहीदों की याद दिलाता है जिन्होंने अपने देश को आज़ाद करवाने के लिए अपने प्राण तक न्योछावर कर दिये थे।

मध्य भाग की पट्टी का रंग सफेद है। यह रंग शाँति और सत्य का प्रतीक है। हम किसी भी देश के साथ युद्ध करना नहीं चाहते। सबके साथ शांति और मित्रता चाहते हैं। सफेद पट्टी के मध्य एक नीले रंग का चक्र है। नीला रंग विशाल आकाश और गहरे समुद्र का प्रतीक है। यह चक्र सम्राट अशोक के धर्म चक्र से लिया गया है। सम्राट अशोक शांतिप्रिय थे। इसलिए उन्होंने महात्मा बुद्ध की शरण ली थी तथा शाँति का मार्ग अपनाया था। इस चक्र में 24 तार हैं जो निरंतर गति और विकास की ओर संकेत करते हैं।

निचले भाग की पट्टी का रंग हरा है। यह रंग

प्रकृति की हरियाली और समृद्धि का प्रतीक है। हरियाली लहलहाते खेतों और समृद्धि उद्योग और व्यापार की उन्नति से प्रकट होती है। पंद्रह अगस्त हमारा स्वतंत्रता दिवस है। इस दिन हमारा देश अंग्रेज़ों की दासता से मुक्त हुआ था। इसे हमारे देश के पहले प्रधानमंत्री स्वर्गीय पंडित जवाहर लाल नेहरू ने सर्वप्रथम दिल्ली के लाल किले पर पंद्रह अगस्त 1947 को फहराया था। इसी की स्मृति में प्रतिवर्ष पंद्रह अगस्त तथा राष्ट्रीय पर्वों पर लाल किले तथा पूरे देश में झंडा फहराया जाता है।

अब भारत के नागरिक इसे अपने घरों, दफ़्तरों, भवनों, स्कूलों, कॉलेजों आदि पर न केवल राष्ट्रीय पर्वों पर बल्कि किसी भी दिन फहरा सकते हैं। हम सबका कर्तव्य है कि हम इसका सम्मान करें। जब राष्ट्रीय ध्वज फहराया जाये या राष्ट्रगान गाया जाये तब हमें सम्मान देने के लिए शाँति पूर्वक खड़े रहना चाहिए। हमें अपने राष्ट्र-ध्वज की सदैव रक्षा करनी चाहिए।

इस प्रकार हमारा झंडा हमारी आज़ादी, हमारे आत्म सम्मान, हमारे स्वाभिमान और हमारी एकता का प्रतीक है। जिसे देखते ही हमारे भीतर देश-प्रेम का असीम स्रोत बहने लगता है। यह झंडा तिरंगा हम सबका है। हमारा कर्तव्य है कि हम इसकी शान में कोई कमी न आने दें और यह हमें हमेशा हवा में ऊँचाइयों पर लहराता दिखाई दे।

इस प्रकार हमारा राष्ट्रीय झंडा हमें यह संदेश देता है कि हम वीरता, त्याग, शाँति और प्रेम से अपने देश का निरंतर विकास करते रहें।

शब्दार्थ

तिरंगा = तीन रंगों का समूह
स्वर्गीय = मृत्यु को प्राप्त
न्योछावर = त्याग करना
स्मृति = याद
सम्राट अशोक = मौर्य वंश का एक राजा
राष्ट्रीय पर्व = राष्ट्र/देश का त्योहार
महात्मा बुद्ध = बौद्ध धर्म को चलाने वाले
समृद्धि = उन्नति, खुशहाली
शहीद = देश के लिए अपने को कुर्बान करना
असीम = सीमा रहित
स्रोत = धारा
प्रधानमंत्री = किसी देश का सबसे बड़ा मंत्री

बताओ

1. हमारे देश के झंडे को क्या कहते हैं?
2. इसे तिरंगा क्यों कहते हैं?
3. केसरी रंग की पट्टी किन शहीदों की याद दिलाती है?
4. सफेद रंग किसका प्रतीक है?
5. नीले रंग का चक्र किस सम्राट का धर्म चक्र है?
6. नीले रंग के चक्र में कितने तार हैं?
7. हरा रंग किसका प्रतीक है?
8. सबसे पहले राष्ट्रीय झंडे को किसने, कब और कहाँ फहराया था?
9. हमें राष्ट्रीय झंडे का सम्मान कैसे करना चाहिये?

वाक्य पूरे करो

झंडे में तीन रंग की बराबर .... की पट्टियाँ हैं।

हम सबके साथ .... और ....चाहते हैं।

नीला रंग........... आकाश और .... समुद्र का प्रतीक है।

चक्र के 24 तार ....और .... की ओर संकेत करते हैं।

हमें राष्ट्रीय ध्वज की सदैव .... करनी चाहिये।

पढ़ो, समझो और लिखो

राष्ट्र + ईय = **राष्ट्रीय**	मित्र + ता = ...
भारत + ईय = ...	वीर + ता = ...
देश + ईय = ...	दास + ता = ...
	स्वतंत्र + ता = ...

'इक' लगाकर नये शब्द बनाओ

उद्योग + इक = औद्योगिक	संकेत + इक = ...
व्यापार + इक = ...	धर्म + इक = ...

विलोम शब्द मिलान करो

आज़ाद	गुप्त
युद्ध	अनेकता
उन्नति	अवनति
प्रकट	गुलाम
एकता	शाँति

'राष्ट्र' शब्द में 'ट्' के नीचे 'र' का रूप ध्यान से देखें। 'राष्ट्र' शब्द से अन्य शब्द बनाओ

राष्ट्र + पति = राष्ट्रपति   राष्ट्र + ईय = ...

राष्ट्र + पिता = ...   राष्ट्र + गान = ...

नीचे राष्ट्रीय और धार्मिक पर्व घुल-मिल गये हैं। उन्हें अलग-अलग करके सही स्थान पर लिखो।

दशहरा, पंद्रह अगस्त, ईद, गणतंत्र दिवस, गाँधी जयंती, दीवाली, होली, वैशाखी

राष्ट्रीय पर्व

1. ....
2. ....
3. ....

धार्मिक पर्व

1. ....
2. ....
3. ....
4. ....
5. ....

नये शब्द बनाओ

शाँति + प्रिय = ...

शाँति + पूर्वक = ...

सम्मान + पूर्वक = ...

प्रधान + मंत्री = ...

स्व +अभिमान = ...

सर्व + प्रथम = ...

राष्ट्र + गान = ...

राष्ट्रीय + पर्व = ...

प्रति + वर्ष = ...

झंडे पर एक नारा लिखो

जैसे :- 1. झंडा ऊँचा रहे हमारा
यह है हमें प्राणों से प्यारा

2. तिरंगा है भारत की शान
रखेंगे हम इसका मान

करो :-

1. राष्ट्रीय झंडे का चित्र बनाओ। उसमें रंग भरो और उस पर पाँच वाक्य लिखो।
2. भारत के पड़ोसी देशों के नाम पता करो और उनके झंडे चिपकाओ।

अध्यापन निर्देश :- अध्यापक बच्चों को समझाये कि 'इक' जुड़ने पर पहला स्वर दीर्घ हो जाता है जैसे 'अ' आ में 'उ' 'औ' में बदल जाता है।

पाठ-16

चालीस मुक्ते

गुरु गोबिंद सिंह जी सिक्खों के दसवें गुरु थे। वे धर्म के रक्षक तथा महान सेनानी थे। भारतीय संस्कृति की रक्षा के लिए उन्होंने नौ वर्ष की आयु में ही अपने पिता श्री गुरु तेग बहादुर जी को बलिदान के लिए प्रेरित किया था। बड़े होकर उन्होंने धर्म की रक्षा के लिए मुगलों से टक्कर ली। एक बार गुरु गोबिंद सिंह जी और उनके साथी आनंदपुर साहिब के किले में घिरे हुए थे। मुगल सेनाओं ने चारों ओर से घेरा डाल रखा था। बाहर से कोई रसद भीतर पहुँच पाना असंभव था। किले के अंदर की रसद आखिर कब तक चलती। आखिर वृक्षों के पत्ते खाकर लड़ने की नौबत आ गई। भूख और प्यास के इस कष्ट को गुरु जी के कुछ शिष्य झेल पाने में कठिनाई महसूस करने लगे। वे किला छोड़ कर जाने को तैयार हो गये। गुरु जी ने उनको बहुत समझाया, किंतु वे न माने। तब गुरु जी ने कहा, ''अच्छा, जो जाना चाहते हों, वे चले जायें, परंतु लिख कर दे जायें कि न वे मेरे शिष्य हैं और न मैं उनका गुरु हूँ।''

संकटों को सह सकने में असमर्थ कुछ शिष्यों ने ऐसा ही लिख दिया और वे किला

छोड़ कर चले गये। जब वे अपने-अपने घर पहुँचे तो उनकी पत्नियों को सारा हाल मालूम हुआ। पत्नियों ने अपने-अपने पतियों को बहुत धिक्कारा।

फलस्वरूप उनमें से कुछ फिर गुरु के पास जाकर लड़ने-मरने को तैयार हो गये। उस समय गुरु साहिब आनंदपुर और चमकौर के किलों से निकल कर मुक्तसर के प्रदेश में भटक रहे थे। मुगल सेना उनका पीछा कर रही थी।

ये शिष्य मुक्तसर नामक स्थान पर जाकर मुगल सेना के साथ भिड़े और लड़ते हुए धराशायी हो गये।

जब गुरु गोबिंद सिंह जी को यह मालूम हुआ तो वे युद्ध-स्थल पर पहुँचे। चालीस शिष्य वीरता से लड़ते हुए मैदान में गिरे पड़े थे। उनमें से एक अभी कराह रहा था। गुरु साहिब ने उसे प्यार से आशीर्वाद दिया और उसकी अंतिम इच्छा पूछी।

उसने हाथ जोड़कर कहा, ''महाराज, आप उस कागज़ को फाड़ डालें जिस पर हस्ताक्षर करके हम आपको दे आये थे।''

गुरु साहब ने उसकी अंतिम इच्छा पूरी कर दी और उन सबको मुक्त होने का आशीर्वाद दिया।

तभी उसने प्राण छोड़ दिये। उन चालीस वीर पुरुषों को 'चालीस मुक्ते' कहा जाने लगा।

शब्दार्थ

रक्षक	=	रक्षा करने वाला	असमर्थ	=	जो समर्थ न हो
रसद	=	भोजन	धराशायी	=	मर जाना
संकटों	=	मुसीबतों	युद्ध स्थल	=	लड़ाई का मैदान
आशीर्वाद	=	आशीष	अंतिम	=	आखिरी

बताओ

(क) कुछ शिष्य किला छोड़कर जाने के लिए तैयार क्यों हो गये?

(ख) शिष्यों की पत्नियों ने घर लौटने पर उनसे कैसा व्यवहार किया?

(ग) कराह रहे शिष्य की अंतिम इच्छा क्या थी?

(घ) चालीस मुक्ते किन्हें कहा जाता है?

वाक्य पूरे करो

वीर, घेरा, शिष्य, दसवें, मुगल

(क) गुरु गोबिंद सिंह सिक्खों के -----गुरु थे।

(ख) मुगल सेनाओं ने चारों ओर से-----डाल रखा था।

(ग) न वे मेरे-----है, न मैं उनका गुरु हूँ।

(घ) ----सेना उनका पीछा कर रही थी।

(ङ) उन चालीस----पुरुषों को चालीस मुक्ते कहा गया।

वाक्यों में प्रयोग करो

घेरा, किला, मैदान, आशीर्वाद

श्रुत लेख

सिक्खों, बलिदान, नौबत, मुक्तसर, आशीर्वाद, हस्ताक्षर, धिक्कार।

पढ़ो, समझो और लिखो

सिक्ख	**सिक्खों**
मुगल	....
संकट	....
चार	....
वृक्ष	....
पुरुष	....

नीचे दिए गए उदाहरण की तरह बॉक्स में दिए गए शब्दों से नए शब्द बनाइए

बलि + दान = बलिदान

+ =

+ =

+ =

+ =

+ =

प्र
पाठ
देश
युद्ध
सेना
धर्म
पति
शाला
स्थल
वीर

नीचे दिए गए शब्दों में 'अ' जोड़कर नए शब्द बनाइए और उनके अर्थ लिखिए

धर्म	अधर्म	....
संभव	....	....
भद्र	....	....
समर्थ	....	....
ज्ञान	....	....
हिंसा	....	....

नीचे दिए गए शब्दों के समान अर्थ वाले शब्दों की सहायता से वर्ग पहेली पूरी कीजिए

1. पंजाब के एक शहर का नाम (ऊपर से नीचे)
2. आज़ाद (बाएँ से दाएँ)
3. श्वास (बाएँ से दाएँ)
4. मुसीबत (ऊपर से नीचे)

		1 मु
4	2	क्त
	3	स
5		र

(संकट, मुक्तसर, साँस, मुक्त)

इन अक्षरों से नया शब्द बनाओ

	शब्द		अक्षर		नया शब्द
1.	गोबिन्द	–	न्द	–	अन्दर
2.	प्यास	–	प्य	–	....
3.	टक्कर	–	क्क	–	....
4.	मुक्तसर	–	क्त	–	....
5.	प्रेरित	–	प्रे	–	....
6.	हस्ताक्षर	–	स्त	–	....

पाठ–17

हमारे त्योहार

बदले दिन फिर बदले रात,
बदले मास और बदले वार।
मौसम बदले बारम्बार,
हर मौसम लाए त्योहार।

पौष मास में सर्दी आयी,
ऊनी कपड़े पहनो भाई।
माघ मास के आगे-आगे,
लोहड़ी रानी दौड़ी आयी।

फाल्गुन आया, होली आयी,
रंग-बिरंगी खूब मनायी।
अरे परीक्षा सिर पर आयी,
चुपके से फिर गर्मी आयी।

अब देखो आयी वैशाखी
फसलों की निपटी अब राखी।
हुआ दाखिला, छुट्टी पायी,
पूरी गर्मी मौज मनायी।

रिमझिम-रिमझिम वर्षा आयी,
सावन का उपहार है लायी।
भादों में प्रिय बहना आयी,
संग सजीली राखी लायी।

फिर दशहरा, दीवाली आयी,
सच की जीत हुई रे भाई।
सबने मिलकर की सफ़ाई,
घर-घर बँटी खूब मिठाई।
ईद बाद फिर क्रिसमिस आयी,
केक, मिठाई सबने खायी।
छुट्‌टियों में फिर मौज उड़ायी,
नये साल की दी बधाई।

शब्दार्थ

बारम्बार = बार-बार
परीक्षा = इम्तिहान
राखी = रक्षा, एक त्योहार
सजीली = सुंदर

बताओ

1. सर्दी में हम कैसे कपड़े पहनते हैं?
2. लोहड़ी का त्योहार किस मास में आता है?
3. आप होली कैसे मनाते हो?
4. वैशाखी आने पर किसान खुश क्यों हो जाता है?
5. आप राखी का त्योहार कैसे मनाते हो?
6. दीवाली पर आप क्या-क्या करते हो?

कविता की पंक्तियाँ पूरी करो

मौसम बदले---------,
हर मौसम लाए------------।
अब देखो आई ------,
फसलों की अब निपटी-----।
छुट्‌टियों में फिर मौज -------।
नये साल की दी ------।

वाक्यों में प्रयोग करो

मास = ...

परीक्षा = ...

राखी = ...

सजीली = ...

रंग-बिरंगी = ...

विलोम शब्द लिखो

दिन =	....	सर्दी =	....
सच =	....	जीत =	....
नया =	....	आगे =	....

अन्तर समझो

राखी - मेरी बहन राखी लायी है। (भाई-बहन के प्यार का सूत्र, धागा)

फसलों की राखी समाप्त हो गयी है। (रक्षा)

सिर - मेरे सिर में दर्द है। (शरीर का एक भाग)

मेरी परीक्षा सिर पर है। (निकट)

सच - सदा सच बोलो।

आप सचमुच आ गये।

पूरी - मैं पूरी खाऊँगा।

मैंने अपनी तैयारी पूरी कर ली है।

बदला - मैंने उससे बदला लिया।

हमने अपना मकान बदला।

समान अर्थ वाले शब्द मिलाओ

मास	वर्ष
परीक्षा	तोहफा
जीत	महीना
साल	इम्तिहान
उपहार	विजय

करो

1. अपने अध्यापक की सहायता से सभी देसी महीनों के नाम लिखो।
2. देसी महीनों के साथ-साथ चलने वाले अंग्रेज़ी महीनों के नाम लिखो।
3. दिनों के नाम लिखो।

त्योहारों के नाम ढूँढ़कर लिखो

लो	ह	ड़ी	क्रि	रा
गु	ई	द	स	खी
रु	वै	श	मि	दी
प	शा	ह	स	वा
र्व	खी	रा	हो	ली

1 ....
2 ....
3 ....
4 ....
5 ....
6 ....
7 ....
8 ....
9 ....

पाठ–18

रॉक गार्डन

प्रिय सहेली मेधावी,

मुझे आज ही तुम्हारा पत्र मिला। तुम्हारे पत्र को पढ़कर मन अति प्रसन्न हुआ कि तुम मुझे याद करती रहती हो। मैं भी तुम्हें रोज़ाना याद करती हूँ।

सचमुच ! मुझे आज भी याद है जब मैं मई–जून की गर्मियों की छुट्टियों में अपने मामा–मामी जी के पास दिल्ली आयी थी। मुझे तुम्हारा साथ बहुत ही अच्छा लगा। तुम्हारे पापा भी बहुत अच्छे हैं जो हमें अक्सर घुमाने ले जाते थे। दिल्ली की मेट्रो ट्रेन का सफर, लाल किला, कुतुबमीनार तथा चाँदनी चौक की वे यादें भला मैं कैसे भुला सकती हूँ।

तुमने मुझसे पूछा था कि चंडीगढ़ में क्या–क्या देखने योग्य है? उस समय मैं चंडीगढ़ के बारे में ज्यादा नहीं जानती थी क्योंकि पहले हम रोपड़ रहते थे और चंडीगढ़ रहते हमें कुछ ही दिन हुये थे। किंतु अब मुझे यहाँ रहते काफी समय हो गया है। सचमुच

! गज़ब का शहर है। यहाँ रोज़गार्डन, आर्ट गैलरी, सुखना झील आदि अनेक देखने योग्य स्थल हैं किन्तु यहाँ के रॉक गार्डन ने मुझे अत्यधिक प्रभावित किया। 'रॉक गार्डन' को

देखकर मुझे ऐसा लगा कि निस्संदेह यह दुनिया के किसी अजूबे से कम नहीं।

इस अद्भुत रॉकगार्डन का निर्माण श्री नेकचंद सैनी ने किया। उन्होंने बेकार की चीज़ों जैसे फ्यूज़ हुई ट्यूब लाइटों, टूटी हुई टाइलों, टूटी चूड़ियों, सड़ी हुई ईंटों, वृक्षों के तनों, बोतलों के ढक्कनों, खराब प्लास्टिक, मिट्टी के बेकार फेंके घड़ों तथा पुराने घिसे टायरों आदि से तरह-तरह की भव्य आकृतियों का निर्माण किया।

इस रॉक गार्डन को तीन भागों में बाँटा गया है। पहले दो भागों में गाँवों की संस्कृति झलकती है। सिर पर घड़े उठाए स्त्रियों, पी. टी करते बच्चों आदि की कलाकृतियाँ बड़ी ही मनोहर हैं। पशु-पक्षियों जैसे हिरन, भालू, बिल्लियाँ, मोर आदि भी बड़े सजीव लगते हैं। मैं तुम्हें क्या बताऊँ? इन कलाकृतियों को देखने से ऐसा लगता है कि ये अभी बोल पड़ेंगी। इसके बाद पानी के झरने यहाँ की सुंदरता को चार चाँद लगा देते हैं। यहाँ मैंने कई तस्वीरें भी खिंचवायीं। किंतु काश! यदि तुम उस समय यहाँ होती तो और भी मज़ा आता। रॉक गार्डन का तीसरा भाग भी बहुत बढ़िया बनाया गया है। यहाँ बने ओपन एयर थियेटर में समय-समय पर सांस्कृतिक कार्यक्रम, फिल्मों की शूटिंग आदि भी होती है। यहाँ पास ही बरामदे में लगे अद्भुत शीशे सचमुच कमाल के हैं। इसमें अजीब-सी शक्लें दिखती हैं। कभी व्यक्ति का छोटा, कभी लम्बा तो कभी भद्दा-सा-मोटे से नाक-मुँह वाला चेहरा दिखाई देता है तो अपने आप ही हँसी छूट जाती है। इस जगह भी मैंने तुम्हें बहुत याद किया। इसके पास ही लगे बड़े-बड़े झूलों का लोग बहुत आनंद लेते हैं।

सखी, मैं चाहती हूँ कि तुम इस अनूठी जगह को ज़रूर देखो। इस बार की दिसम्बर की छुट्टियों में तुम चंडीगढ़ मेरे पास चले आओ। तुम्हारा साथ पाकर तो छुट्टियों की खुशियाँ भी दोगुनी हो जायेंगी और मैं तुम्हें इस रॉक गार्डन को दिखाने लेकर जाऊँगी। अपनी बहन रिदम को भी अपने साथ ले आना।

तुम्हारी प्रतीक्षा में !

तुम्हारी प्यारी सहेली,
चार्वी

शब्दार्थ

रोज़ाना	=	हर रोज़	भव्य आकृतियाँ	=	सुंदर शक्लें
निस्संदेह	=	बिना किसी शंका के	मनोहर	=	मन को हरने वाला, सुंदर
अद्भुत	=	अजीब	कलाकृतियाँ	=	कला से सम्बन्धित रचनायें
गज़ब	=	अनोखा	अत्यधिक	=	बहुत ज़्यादा

बताओ

1. चार्वी छुट्टियाँ मनाने किसके घर और कहाँ गयी थी?
2. चार्वी की सहेली ने दिल्ली में उसे कहाँ-कहाँ घुमाया?
3. चंडीगढ़ में क्या-क्या देखने योग्य है?
4. चार्वी को चंडीगढ़ में सबसे अच्छा कौन-सा स्थान लगा?
5. रॉक गार्डन का निर्माण किसने किया?
6. रॉक गार्डन में किन चीज़ों से कलाकृतियों का निर्माण किया गया है?

शब्द के भीतर शब्द को ढूँढो

निम्नलिखित शब्दों को ध्यान से देखो। बच्चो आपको इनके भीतर ही दो और शब्द बने मिलेंगे। ढूँढो और लिखो

मूल शब्द	**शब्द में छिपे शब्द**	
निस्संदेह	संदेह,	देह
सजीव	....	....
नेकचंद	....	....
सुंदरता	....	....
आनंद	....	....

बच्चो ! हर एक का कोई न कोई नाम ज़रूर होता है। दुनिया में कुछ भी ऐसा नहीं जिसका कोई नाम न हो।

नाम भी तरह-तरह के होते हैं- व्यक्तियों के नाम, पशु-पक्षियों के नाम, चीज़ों के नाम, शहरों-देशों के नाम, जगहों के नाम, पेड़-पौधों के नाम, फलों, सब्ज़ियों, फूलों के नाम आदि।

बच्चो ! इस पाठ में आए नामों को ढूँढकर लिखो

व्यक्तियों के नाम	:	**चार्वी**	**मेधावी**	**रिदम**
महीनों के नाम	:	....	....	....
रिश्तों के नाम	:	....	....	....
शहरों के नाम	:	....	....	....
जगहों के नाम	:	....	....	....
चीज़ों के नाम	:	....	....	....
पशु-पक्षियों के नाम	:	....	....	....
शरीर के अंगों के नाम	:	....	....	....

पाठ–19

शिष्टाचार

अध्यापक : रवि बेटा! कृपया मुझे अपनी पेंसिल देना।

रवि : सर, लीजिए।

अध्यापक : धन्यवाद ।

रवि : सर, आप तो मुझसे बड़े हैं। फिर आपने मुझसे पेंसिल लेते समय 'कृपया' और पेंसिल लेने के बाद 'धन्यवाद' क्यों कहा?

अध्यापक : रवि ! बातचीत करते समय सभी को एक दूसरे से शिष्टाचार से बात करनी चाहिए। छोटों को बड़ों से और बड़ों को छोटों से बात करते समय शिष्टाचार का ध्यान रखना चाहिए। शिष्टाचार का पालन करने के लिए उम्र की कोई सीमा नहीं होती।

रवि : सर, शिष्टाचार क्या होता है?

अध्यापक : बेटा! सभ्य आचरण और व्यवहार ही शिष्टाचार कहलाता है। जीवन में इसका बहुत महत्व है। यदि आपको किसी से कोई वस्तु लेनी हो तो 'कृपया' शब्द का प्रयोग करें और जब आपको वह वस्तु मिल जाये तो जिससे आपको वह वस्तु प्राप्त हुई है, उसका धन्यवाद करना न भूलें।

सुरेश : सर, पंकज अक्सर मुझसे पेंसिल, रंग और रबड़ माँगता रहता है और जब मैं उससे वापिस माँगता हूँ तो वह झूठ ही कह देता है कि मैंने तो तुम्हारी चीज़ तुम्हें वापिस कर दी थी।

मेधावी : सर, हमारी कक्षा में से रोज़ किसी न किसी की कॉपी, किताब या पेंसिल गुम हो जाती है।

अध्यापक : किसी से कोई चीज़ लेकर उसे समय पर वापिस न करना, टालमटोल करना, झूठ बोलना और किसी की कोई चीज़ चुराना बुरी बातें हैं।

विवेक : सर! कल मेरा अपने प्रिय मित्र से किसी कारण झगड़ा हो गया। बाद

में मुझे अहसास हुआ कि गलती मेरी ही थी। क्या अब अपनी गलती मान लेने पर मुझे मेरा मित्र क्षमा कर देगा?

अध्यापक : क्यों नहीं! अपनी गलती को मान लेना शिष्टाचार की मुख्य निशानी है। शिष्ट व्यक्तियों से जब कोई गलती हो जाती है तो वे खेद प्रकट करते हैं और सहज ही अपनी गलती स्वीकार करते हैं। सचमुच! तुम्हारा व्यवहार शिष्ट है।

सुरेश : सर! आधी छुट्टी की घंटी बजते ही कुछ बच्चे स्कूल में धमाचौकड़ी मचाते हैं। एक दूसरे को धक्के देते हुए तथा शोर मचाते हुए भागते हैं।

अध्यापक : केवल आधी छुट्टी के समय ही नहीं अपितु पूरी छुट्टी के समय भी कुछ विद्यार्थी धक्कामुक्की करते हैं। स्कूल बस में एक दूसरे को धक्का मारते हुए भागकर चढ़ते हैं। बच्चो। बस में लाइन बनाकर चढ़ना और उतरना चाहिए। जल्दबाज़ी नहीं करनी चाहिए। बस के अंदर भी शांतिपूर्वक बैठना चाहिए।

मेधावी : सर ! मीनू अक्सर कक्षा में बातें ही करती रहती है। जब आप पढ़ा रहे होते हैं तो वह कभी उँगलियाँ चटकाती रहती है या फिर नाखून चबाती रहती है। इससे मेरा ध्यान भी भंग होता है। कृपया मुझे किसी दूसरी जगह पर बिठा दीजिए।

अध्यापक : कक्षा में ध्यानपूर्वक बैठना चाहिए। उँगलियाँ चटकाना या नाखून चबाना अच्छी बात नहीं है। जब अध्यापक पढ़ा रहे हों तो उनकी बात ध्यान से सुननी चाहिए। व्यर्थ इधर-उधर नहीं देखना चाहिए। कक्षा में आपको सीधा बैठना चाहिए। मेधावी ! आपको जगह बदलने की ज़रूरत नहीं पड़ेगी। मीनू एक अच्छी व समझदार लड़की है। मैं आशा करता हूँ कि वह मेरी बात समझ गयी होगी और फिर शिकायत का कोई अवसर नहीं देगी।

अध्यापक : अमिताभ! आप बताइए कि अच्छे बच्चे कौन होते हैं?

अमिताभ : जो बच्चे सुबह प्रार्थना सभा में पंक्ति बनाकर जाते हैं और हाथ जोड़कर प्रार्थना करते हैं, वे अच्छे बच्चे होते हैं।

अध्यापक : बिल्कुल ठीक! (अनिल की ओर इशारा करते हुए) अनिल! आप बताइए।

अनिल : सर! अच्छे बच्चे बिना पूछे किसी की कोई चीज़ नहीं लेते और हमेशा सच बोलते हैं।

अध्यापक : बच्चो! आप में से कौन बताएगा कि और किस तरह से स्कूल में शिष्टाचार का पालन किया जा सकता है?

(सभी बच्चे ऊँची आवाज़ में एक साथ मैं बताऊँ, मैं बताऊँ, बोलते हैं जिससे सारी कक्षा में एकदम शोरगुल हो जाता है)

अध्यापक : जब कभी अध्यापक आपसे कोई प्रश्न करें, जिसे उसका उत्तर आता हो तो वे अपना हाथ ऊपर खड़ा कर दिया करें। अध्यापक स्वयं ही बारी-बारी से उनसे उत्तर सुन सकते हैं। इस प्रकार एक साथ ऊँची आवाज़ में बोलना शिष्टाचार नहीं है। अच्छा, सतीश! तुम बताओ?

सतीश : कक्षा में चुपचाप बैठकर, अपने सहपाठियों से मिलजुल कर रहने, स्कूल को साफ-सुथरा रखकर तथा अध्यापकों की आज्ञा मानकर हम शिष्टाचार का पालन कर सकते हैं।

अध्यापक : बिल्कुल सही! शिष्ट बच्चे कक्षा में शोरगुल नहीं करते तथा अपना काम चुपचाप बड़ी सहजता से करते हैं। बच्चो! एक बात याद रखना कि शिष्टाचार का पालन करने वाले को ही सभी पसंद करते हैं।

शब्दार्थ

शिष्टाचार	=	सभ्य आचरण और व्यवहार	झूठ	=	मिथ्या, असत्य
कक्षा	=	श्रेणी, जमात, दर्जा	खेद	=	अफ़सोस
व्यवहार	=	बर्ताव	धमाचौकड़ी	=	उछल कूद, ऊधम
व्यर्थ	=	बेकार	मेधावी	=	ज्ञानी, तीव्र बुद्धि वाली/वाला
शिकायत	=	असंतोष दूर करने के लिए किया गया निवेदन			

बताओ

1. शिष्टाचार क्या होता है?
2. शिष्ट व्यक्तियों से जब कोई ग़लती हो जाती है तो वे क्या करते हैं?

3. स्कूल बस में किस तरह चढ़ना और उतरना चाहिए?

4. कक्षा में किस तरह बैठना चाहिए?

5. प्रार्थना सभा में हमें कैसे खड़े होना चाहिए?

सही शब्द चुनो और वाक्य पूरे करो

कृपया, मिलकर, झूठ, क्षमा, पंक्ति

1. अपनी ग़लती मान लेने वाले को .... कर देना चाहिए।

2. अच्छे बच्चे किसी से कोई चीज़ माँगते समय ....शब्द का प्रयोग करते हैं।

3. अच्छे बच्चे सबसे.............रहते हैं।

4. हमें ....नहीं बोलना चाहिए।

5. हमें प्रार्थना सभा में.............बनाकर चलना चाहिए।

सही शब्दों के जोड़े मिलाओ

माँगी वस्तु	मानना
हाथ	बैठना
प्रणाम	सुनना
धीरे	रखना
शांतिपूर्वक	बोलना
ध्यानपूर्वक	जोड़ना
सफ़ाई	लौटाना
आज्ञा	करना

श्रुतलेख

धन्यवाद, व्यवहार, वापिस, पेंसिल, अहसास, धक्कामुक्की, उँगलियाँ, शिकायत, शिष्टाचार, उत्तर, बिल्कुल

संयुक्त अक्षर से नया शब्द बनाओ

शब्द	संयुक्त अक्षर	नया शब्द
अक्सर	क्स	बक्सा
तुम्हारी	म्ह	....
व्यवहार	व्य	....
छुट्टी	ट्ट	....

जल्दबाज़ी	ल्द	....
धक्का	क्क	....

चौकोर खानों में दिये गये शब्दों/शब्दांशों की सहायता से समान अर्थ वाले शब्दों को लिखो

बाएँ से दाएँ

1. मौका
3. बिना कुछ कहे सुने अर्थात् मौन रहकर
7. अंदर का विपरीत शब्द
4. स्कूल

ऊपर से नीचे

1. पढ़ाने वाला
2. कृपा करके
5. बहानेबाजी
6. जिसे स्कूल में चपड़ासी बजाता है।

			1 अ	व	स	र		
	2						5 टा	
3	प	चा			4 वि		ल	
	या		क					
					6 घं		टो	
7 बा								

पाठ–20

होनहार बालक चंद्रगुप्त

(वन प्रदेश का दृश्य : मंच पर छोटे–बड़े टीले नज़र आ रहे हैं। साँझ का समय है। चाणक्य और उसका मित्र वररुचि मंच पर प्रवेश करते हैं। चाणक्य का चेहरा क्रोध से तमतमा रहा है।)

चाणक्य : (क्रोध में) नहीं, ऐसा अपमान और सहन नहीं हो सकता। (अपनी खुली शिखा को हाथों से स्पर्श करता है) नंद के राज्य का सर्वनाश करूँगा।

वररुचि : (समीप आकर शांत स्वर में) चाणक्य, तुम यह कैसे कर पाओगे? इतने बड़े राज्य को हिलाना हमारे लिए संभव नहीं है।

चाणक्य : इसके लिए किसी तेजस्वी, पराक्रमी और वीर बालक की खोज करनी होगी, जो नंदवंश का विनाश करके एक सशक्त साम्राज्य की नींव रखे।

वररुचि : परंतु ऐसा होनहार बालक.........

(दोनों दूसरी तरफ देखने लगते हैं। कुछ बालकों की टोली शोर करती

हुई समीप आ रही है। टोली के आगे एक अत्यन्त तेजस्वी और प्रभावशाली बालक है। वह अपने साथियों को एकत्र कर कहता है-)

बालक : (स्थिर वाणी से) आज हमारा दरबार इसी टीले पर होगा। आज हम फिर से राजा प्रजा का खेल खेलेंगे। (बालक तीखे स्वर में कहता है) सैनिक!

(चाणक्य और वररुचि की उत्सुकता बढ़ती है। दोनों ओट में हो जाते हैं। एक बालक सैनिक की भूमिका निभाता हुआ बालक के सामने आ खड़ा होता है।)

सैनिक : आज्ञा महाराज!

बालक : आज हम खुले दरबार में न्याय करेंगे। (दूर चाणक्य 'वाह' 'वाह' कहता है। ठीक ऐसा ही सम्राट इस देश का कल्याण कर सकता है।) (सैनिक दो व्यक्तियों को सम्राट के सामने प्रस्तुत करता है।)

सैनिक : महाराज ये दोनों उधर चौराहे पर झगड़ा कर रहे थे, अशाँति फैला रह थे।

बालक : (क्रोध से) हूँ, तो यह मामला है। (व्यक्ति से) बोलो क्या बात है? तुम जनपद में झगड़ा क्यों कर रहे थे?

पहला व्यक्ति: (दूसरे की ओर देखकर) महाराज, मैं लुट गया। कुछ वर्ष पूर्व मैंने यात्रा पर जाने से पहले सोने की कुछ मोहरें इसे दी थीं। यह मेरा मित्र है, पर अब इसके मन में बेईमानी आ गई है। अब यह कहता है कि मैंने मोहरें लौटा दी हैं।

दूसरा व्यक्ति :(विनम्रता से) महाराज ! मैं सौगंध खाकर कहता हूँ, मैंने मोहरें लौटा दी हैं। (अपने हाथ की छड़ी अपने मित्र को थमाते हुए) मैं फिर आपके सामने सौगंध खाकर कहता हूँ कि मैंने मोहरें अपने मित्र को लौटा दी हैं। (शीघ्र ही छड़ी पुनः ले लेता है बालक उस सारे वृतांत को ध्यान से सुनता है। पुनः ऊँचे स्वर में कहता है-)

बालक : न्याय अभी होगा। सैनिक ! यह छड़ी पहले व्यक्ति को वापिस दे दो।

(सभी आश्चर्य चकित हैं) सभी उत्सुकतावश देखने लगते हैं।

पहला व्यक्ति: परंतु महाराज! मेरा सोना......

बालक : घर जाकर छड़ी तोड़ देना। तुम्हारी मोहरें मिल जायेंगी।

(पीछे से चाणक्य और वररुचि 'धन्य' 'धन्य' कह उठते हैं। कैसा न्याय? वाह! ऐसी तीक्ष्ण बुद्धि।

बालक : कोई और फरियादी है?

सैनिक : एक निर्धन ब्राह्मण है।

बालक : प्रस्तुत करो (सैनिक निर्धन ब्राह्मण को सामने लाता है)

(चाणक्य ब्राह्मण के वेश में सामने आता है। विनोद के लिए सम्राट बालक के सामने हाथ जोड़कर खड़ा हो जाता है।)

चाणक्य : महाराज, मैं बहुत वृद्ध हूँ, कोई काम काज नहीं है। छोटे-छोटे बच्चे हैं। यदि राजकीय कोष से गाय मिल जाये तो अपने परिवार का लालन-पालन अच्छी तरह से कर पाऊँगा।

बालक : (उंगली से संकेत करते हुए) सामने मैदान में बहुत-सी गायें चर रही हैं। उन गायों में से चाहे जितनी गायें अपने साथ ले जाओ।

चाणक्य : (निवेदन भाव से) पर महाराज, वे गायें तो दूसरों की हैं। यदि इसके लिए मुझे कोई दंड दे तो!

बालक : (क्रोध में) किसमें साहस है ब्राह्मण, जो तुझे दंड दे। जानता नहीं, यहाँ मेरा साम्राज्य है। (सशक्त स्वर में) महामंत्री! एक अन्य बालक महामंत्री का अभिनय करता हुआ)

महामंत्री : आज्ञा महाराज!

बालक : सारे राज्य में गुप्त फैला दो। दीन-दुखियों की सहायता राजकोष से तुरंत की जाये। यह हमारी आज्ञा है। सुख-दुख में हम प्रजा के साथ हैं।

(बालक राजकीय मुद्रा में टीले से उठता है। हाथ ऊपर उठा कर कहता है–

बालक : आज दरबार यहीं समाप्त होता है ; कल फिर न्याय होगा। सैनिको, प्रस्थान की तैयारी करो।

(चारों ओर) कोलाहल। बालकों की टोली शोर मचाती चली जाती है। चाणक्य और वररुचि वहीं खड़े हैं)

चाणक्य : (हर्ष से) वररुचि, मेरा लक्ष्य पूरा हुआ। (मुट्ठी भींचकर) नंद का सर्वनाश होगा। अवश्य होगा। यही बालक मगध का भावी सम्राट होगा। चंद्रगुप्त ! हाँ यही, यही नाम होगा इस वीर बालक का।

वररुचि : (उत्सुकता से) मित्र।

चाणक्य : समय नष्ट मत करो। शीघ्र चलो। मुझे अभी इसी वक्त इसके माता-पिता से मिलना होगा। मैं इसे तक्षशिला ले जाऊँगा। वहीं इसकी पढ़ाई की व्यवस्था करूँगा। यही हमारा भावी सम्राट होगा। (दोनों शीघ्रता से एक ओर प्रस्थान करते हैं)

शब्दार्थ

शिखा	=	चोटी	गुप्तचर	=	जासूस
स्पर्श	=	छूना	जनपद	=	बस्ती
तीक्ष्ण	=	तीव्र	तेजस्वी	=	प्रतापी
राजकीय कोष	=	राजा का खजाना	भूमिका	=	भेष बदलना
वृतांत	=	ब्यौरा	भावी	=	आगे आने वाला

बताओ

1. नंद वंश के सर्वनाश के लिए चाणक्य को कैसे बालक की तलाश थी?
2. बालक चंद्रगुप्त बचपन से ही कैसा था?
3. दोनों मित्र जनपद पर झगड़ा क्यों कर रहे थे?

4. बालक चंद्रगुप्त ने न्याय कैसे किया?

5. क्या यही बालक मगध का भावी सम्राट बन पाया?

वाक्यों में प्रयोग करो

सर्वनाश, उत्सुकता, जनपद, तीक्ष्ण, बुद्धि, गुप्तचर, प्रस्थान, भावी।

वाक्य पूरे करो

1. नंद के राज्य का .... करूँगा।
2. आज हम खुले दरबार में ....करेंगे।
3. दीन-दुखियों की सहायता....................से तुरन्त की जाये।

वाक्य बनाओ

				वाक्य
1.	सौगंध खाना	:	कार्य करने की प्रतिज्ञा लेना	....
2.	नींव रखना	:	कार्य का आधार बनाना	....
3.	मुट्ठी भींचना	:	किसी बात को लेकर मन में जोश आना	....

पढ़ो और समझो

मान	=	अपमान	शांति	=	अशांति
न्याय	=	अन्याय	सुख	=	दु:ख

'क' में बॉक्स में दिये शब्द का विपरीत शब्द 'ख' भाग में से ढूँढकर मिलान करो

क	ख
1. किसी का अपमान मत करो।	1. हमें समाज में अशांति नहीं फैलानी चाहिए।
2. हमें अपना काम ईमानदारी से करना चाहिए	2. राजा की अवज्ञा कौन कर सकता है?
3. उचित कार्य करने पर पुरस्कार मिलेगा।	3. सभी का सम्मान करो।
4. यह राजा की आज्ञा है।	4. अनुचित कार्य करने पर दंड मिलेगा।
5. कक्षा में शाँति से बैठो।	5. हमें किसी के साथ बेईमानी नहीं करनी चाहिए।

सामने बॉक्स में दिए गए शब्दों में समान अर्थ वाले शब्द छिपे हैं। उन्हें ढूँढकर सही शब्द के आगे लिखो

साहस : शूरता शौर्य

झगड़ा : ....

ब्राह्मण : ....

सम्राट : ....

कोष : ....

क्रोध : ....

वृद्ध : ....

मित्र : ....

दोस्त, बूढ़ा, बुज़ुर्ग, पंडित, विप्र, खजाना, नृप, राजा, क्लेश, सखा, पराक्रम, बखेड़ा, गुस्सा, रोष, भंडार, कोप, साथी

शब्द के जोड़ों (शब्द-युग्म) को 'और' लगाकर लिखिए और उनके अर्थ समझो

दीन-दु:खियों दीन और दु:खियों

राजा-प्रजा ....

माता-पिता ....

लालन-पालन ....

पाठ–21

उपकार का फल

नंदन वन में बहुत से जानवर रहते थे। उन जानवरों में कुछ जानवर ऐसे भी थे जिनकी आपस में गहरी मित्रता थी। इन मित्र जानवरों में एक भेड़िया भी था। वह बहुत ही परोपकारी स्वभाव का था। वह हमेशा दूसरों की सहायता करने के लिए तैयार रहता था। वह भूखों को भोजन देने को तैयार था। उसके मित्र जानवरों में दूसरों की सहायता करने की भावना उसके मुकाबले कम थी।

एक बार मित्र जानवरों को उनकी भूख मुताबिक भोजन नहीं मिल रहा था। वे सभी भरपेट भोजन करने के लिए भोजन की तलाश में इधर–उधर घूम रहे थे। अंत में बहुत कोशिश करने पर संध्या के समय तक कुछ जानवर भोजन जुटा पाए तो कुछ खाली हाथ लौट आये। किंतु उनकी खास बात यह थी कि वे भोजन इकट्ठे मिलकर करते थे। वे इस बात की परवाह नहीं करते थे कि कोई कुछ भोजन जुटा पाया है कि नहीं। भेड़िए ने तो आज बड़ा शिकार मारा था जिसे देखकर सभी के मुँह में पानी भर आया। सभी के चेहरे खिल उठे थे कि आज भरपेट खायेंगे।

उन्होंने भोजन करना शुरू ही किया था कि भेड़िए की नज़र अपनी ओर आ रहे पाँच-सात अजनबी जानवरों पर पड़ी। मित्र जानवरों ने भोजन करना शुरू कर दिया किंतु भेड़िया उन अजनबी जानवरों की तरफ एकटक देखता रहा। जब वे उनके पास पहुँचे तो भेड़िए ने पूछा, ''आपको पहले इस वन में नहीं देखा। क्या आप किसी अन्य स्थान से आए हो? मित्र! तुमने हमें ठीक पहचाना।'' उन अजनबी जानवरों में से एक ने कहा। 'हम आपकी क्या सेवा कर सकते हैं? भेड़िए ने प्रश्न किया। मित्र! शिकारी कई दिन से हमारे जंगल में जानवरों का शिकार कर रहे हैं। हम कई दिनों से अपनी जान बचाते हुए घूम रहे हैं और भूखे हैं। भेड़िए ने कहा, ''कोई बात नहीं, सौभाग्यवश हम भोजन कर ही रहे हैं, आप भी भोजन कर लीजिए।'' अन्य मित्र जानवरों को भेड़िए पर गुस्सा तो आया किंतु मित्रता के कारण वे कुछ कह न पाये। वे कुछ दिन मित्र जानवरों के साथ ही रहे और फिर अपने वन को लौट गये। उनके जाने के बाद मित्र जानवरों ने भेड़िए से कहा कि हम तो पहले ही भूख के सताये हुए थे तुमने ऊपर से हमारा भोजन उन्हें खिला दिया। भेड़िए ने कहा, '' मित्रो! अपने लिए तो सभी जीते हैं किंतु हमें संकट के समय दूसरों की भी मदद करनी चाहिये। भेड़िए की बात सुनकर सभी के मुँह को ताला लग गया।

समय बीतता गया। एक बार नंदन वन में बीमारी फैल गई। बीमारी के कारण जंगल के जानवर मरने शुरू हो गये। मित्र जानवर जंगल छोड़कर किसी दूसरे स्थान की तलाश में निकल पड़े। तीन-चार दिन घूमते-घूमते वे एक जंगल में गये। जंगल में प्रवेश करते ही हिरण ने उन्हें रोक लिया। उसने कहा, ''इस जंगल में बाहर के जानवर यहाँ नहीं आ सकते।'' ''हम बहुत संकट में हैं और भूखे भी हैं। हमारी मदद करो।'' भेड़िए ने कहा। किंतु हिरण ने कहा, ''पर जंगल के स्वामी शेर की आज्ञा है जिसका मैं उल्लंघन नहीं कर सकता।'' हिरण का उत्तर सुनकर मित्र जानवर सोचने लगे- अब पता चला भेड़िए को। बहुत भाग भागकर दूसरों की सहायता करता था। भेड़िया सोच ही रहा था कि अचानक एक तरफ से आवाज़ आयी, ''आओ! आओ! इस जंगल के सामने से कैसे घूम रहे हो तुम आज?'' यह आवाज़ उन जानवरों में से एक की थी, जिनकी भेड़िए ने मदद की थी। वे अंदर जाने ही लगे कि हिरण बोला, ''पहले शेर की आज्ञा लेकर आओ, तब अंदर जाने दूँगा।'' तभी वह जानवर शेर के पास गया और सारा वृतांत बताया। शेर ने उन्हें कहा कि हाँ ! हाँ, उनकी सहायता अवश्य करो।

शेर का आदेश हिरण को भी भेज दिया गया। हिरण ने उन्हें जंगल में आने की अनुमति दे दी। मित्र जानवर फिर वहाँ बहुत दिन रहे। जंगल के सभी जानवरों ने उनकी

खूब सेवा की। भेड़िए के मित्र मन ही मन सोच रहे थे कि यह सारा कुछ भेड़िए के उपकारी स्वभाव का ही परिणाम है। कुछ दिनों बाद भेड़िए और उनके मित्रों ने जंगल के जानवरों से कहा कि हम अब अपने नंदन वन में जाना चाहते हैं। हमें विदा दो। हम आपके बहुत आभारी हैं। आपने हम पर एहसान किया है। आपने हमारी संकट में सहायता की। जंगल के जानवरों ने कहा, 'मित्रो ! यह हमारा अहसान नहीं बल्कि कर्त्तव्य था।' जिस प्रकार कर्त्तव्य आपने निभाया था, उसी प्रकार हमने निभाया। फिर भेड़िया तथा उसके मित्र जानवर अपने वन को वापिस लौट आये।

शब्दार्थ

मुताबिक	=	अनुसार	संकट	=	मुसीबत
तलाश	=	ढूँढना	उल्लंघन	=	आदेश न मानना
अजनबी	=	जिससे जान पहचान न हो	वृतांत	=	कहानी
सौभाग्यवश	=	किस्मत से	अनुमति	=	आज्ञा
एहसान	=	भलाई	परिणाम	=	फल

बताओ

1. भेड़िये का स्वभाव कैसा था?
2. मित्र जानवर भोजन करने को क्यों व्याकुल थे?
3. अजनबी जानवरों के संकट और भूख को देखकर भेड़िए ने क्या कहा?
4. भेड़िए ने जब अजनबी जानवरों को भोजन करने को कहा तो मित्र जानवरों को गुस्सा क्यों आया?
5. मित्र जानवर नंदन वन छोड़कर क्यों चले गये।
6. हिरण ने उन्हें जंगल में जाने क्यों नहीं दिया?
7. शेर ने मित्र जानवरों को जंगल में रहने की अनुमति क्यों दी?

उपयुक्त शब्द चुनकर वाक्य पूरे करो

संकट इकट्ठा परोपकारी गुस्सा मित्रता कर्त्तव्य एहसान

1. भेड़िया बहुत ही.................. स्वभाव का था।
2. वे भोजन..................ही करते थे।
3. मित्र जानवरों को भेड़िये पर..................आया किंतु..................के कारण वे कुछ कह न पाये।

4. हमें ....के समय दूसरों की मदद करनी चाहिये।

5. मित्रो ! यह हमारा ....नहीं बल्कि.................था।

वाक्य बनाओ

खाली हाथ लौट आना	=	निराश वापिस आ जाना	....
मुँह पर ताला लग जाना	=	चुप्पी साध लेना/जवाब न सूझना	....
एक टक देखना	=	लगातार देखना	....
चेहरा खिल उठना	=	खुश होना	....
मुँह में पानी भर आना	=	ललचाना	....

शब्द में से शब्द ढूँढ़कर लिखो

जानवर

जान वर

भरपेट

बीमारी

अनुमति

चौकोर खानों में से जंगली जानवरों के नाम ढूँढ़कर सामने लिखो –

हि	र	ण	ला	श	बा
वी	ना	शे	र	प	घ
ची	बो	भा	बं	हा	थी
ता	द	लू	द	पा	य
थ	लं	गू	र	रा	लो
लो	ग	भे	ड़ि	या	म
प	ची	फ	री	ड़ी	ड़ी

1 ..हिरण......
2 ....
3 ....
4 ....
5 ....
6 ....
7 ....
8 ....
9 ....
10 ....

बोलियों का मिलान करो

शेर	चिंघाड़ना
चीता	डकारना
बंदर	रंभाना
भैंस	किलकिलाना
गाय	हिनहिनाना
सुअर	दहाड़ना
हाथी	हुरड़-हुरड़
घोड़ा	गुर्राना

लिंग बदलो

शेर	=	शेरनी
हिरण	=	
रीछ	=	
ऊँट	=	
साँप	=	
बाघ	=	
हाथी	=	
सियार	=	

साँपिन, हिरणी, रीछनी, बाघिन,
हथिनी, सियारिन, शेरनी, ऊँटनी

पाठ–22

गुरु गोबिंद सिंह को शीश झुकाएँ

आओ! तुम्हें इतिहास पुरुष के, बलिदानों की कथा सुनाएँ।
देश धर्म पर वार दिए सुत, उस दानी को शीश झुकाएँ॥

जीती कौमें बलिदानों पर
यह इतिहास बताता है
देश धर्म की रक्षा करने
संत सिपाही आता है
भेज पिता को धर्म की खातिर
खुद तलवार उठाता है
पंथ खालसा का सिरजन कर
इक इतिहास बनाता है।

चिड़ियों से जो बाज लड़ाए–उस योद्धा पर बलि बलि जाएँ।
देश धर्म पर वार दिए सुत, उस दानी को शीश झुकाएँ॥

धर्म है पहले देश है पहले
बाकी आना जाना है
कुर्बानी की अजब कहानी
को फिर से दोहराना है
दीवारों में चिने लाल दो
धर्म युद्ध में काम दो आए
पिता दान–फिर पुत्र दानकर
वंशदानी जो कहलाए॥

वंश दान करने वाले, गुरु गोबिंद सिंह पर बलि बलि जाएँ।
देश धर्म पर वार दिए सुत, उस दानी को शीश झुकाएँ॥

शब्दार्थ

बलिदान	=	कुर्बानी	सुत	=	पुत्र
दानी	=	दान देने वाला	कौम	=	राष्ट्र
सिरजन	=	निर्माण, बनाना	योद्धा	=	युद्ध करने वाला
वंश दानी	=	पूरे वंश को दान करने वाला, यहाँ गुरु गोबिंद सिंह जी को वंशदानी कहा गया है।			
धर्म-युद्ध	=	धर्म की रक्षा के लिए लड़ाई			

बताओ

1. कविता में इतिहास पुरुष किसे कहा गया है?
2. गुरु गोबिंद सिंह जी को वंशदानी क्यों कहा जाता है?
3. खालसा पंथ की स्थापना किसने की थी?
4. गुरु गोबिंद सिंह जी का अन्य क्या नाम प्रसिद्ध है?
5. गुरु गोबिंद सिंह जी ने अपने देश और धर्म की खातिर कितने पुत्रों का बलिदान दिया था?

कविता की पंक्तियाँ पूरी करो

देश-धर्म पर वार दिये सुत,
....
चिड़ियों से जो बाज लड़ाए,
....
वंश दान करने वाले
....

वाक्यों में प्रयोग करो

इतिहास-पुरुष = ...
वंशदानी = ...
देश धर्म = ...
संत-सिपाही = ...

तुक मिलाओ

सुनायें	कहलाये
उठाता	झुकायें
आना	बनाता
आये	जाना

दो-दो पर्यायवाची लिखो

शीश = ...

सुत = ...

तलवार = ...

कथा = ...

पिता = ...

गुरु = ...

'इतिहास' शब्द में 'इक' लगाकर नया शब्द 'ऐतिहासिक' बना। इसी प्रकार 'इक' लगाकर नये शब्द बनाओ

धर्म + इक + = -------- परिवार + इक =--------

समाज + इक =-------- अंतर + इक =------

चौखाने में सिक्खों के दस गुरुओं के नाम छिपे हैं। उन पर गोला लगाओ और सामने क्रम अनुसार उनके नाम लिखो

प	स	त	ल	अं	क	ख	प	च	ल	अ	ह	ह	क
ट	रि	प	ह	ग	न	क	त	न	क	र्जु	कि	रि	च
का	दि	ना	न	द	ह	पि	ता	अ	पि	न	सा	कि	प
पा	ना	न	क	दे	व	दि	न	म	ता	दे	न	श	ट
ल	ट	हि	क	व	ल	च	प	र	ना	व	स	न	ल
क	ति	सि	वा	टि	पि	रा	म	दा	स	ह	र	प	ट
ते	ग	ब	हा	दु	र	हि	क	स	त	प	थ	गो	क
का	ता	ह	स	द	न	स	ट	प	ह	र	गो	विं	द
लि	पा	प	त	ह	र	रा	य	फ	स	ल	न	द	म

1. गुरु...
2. गुरु...
3. गुरु...
4. गुरु...
5. गुरु...
6. गुरु...
7. गुरु...
8. गुरु...
9. गुरु...
10. गुरु...

पाठ–23

सत्यं वद

एक सौ कौरव कुमार तथा पाँच पाँडव कुमार शिक्षा प्राप्त करने के लिए जब अपने गुरु जी के पास गये तो गुरु जी ने पहले दिन उन्हें एक पाठ पढ़ाया– 'सत्यम् वद' अर्थात् सच बोलो। गुरु ने अपने शिष्यों को कहा, ''इस पाठ को सभी याद करो। मैं तुम सबसे कल यह पाठ सुनूँगा।'' अगले दिन सभी शिष्य गुरु जी के पास पाठशाला पहुँच गये गुरु जी ने सभी से पाठ सुनाने को कहा तो सभी सौ कौरवों तथा चार पाँडवों ने गुरु जी द्वारा पढ़ाया पाठ 'सत्यं वद' अर्थात् सच बोलो सुना दिया किंतु युधिष्ठिर ने पाठ नहीं सुनाया और चुपचाप बैठा रहा। गुरु ने कहा, ''सभी शिष्यों ने पाठ सुना दिया। फिर तुम चुपचाप क्यों हो? तुम भी पाठ सुनाओ।''वह बोला, ''गुरु जी, मुझे पाठ याद नहीं हुआ।'' ''कोई बात नहीं। तुम पाठ कल सुना देना।'' गुरु जी ने कहा। कक्षा में बैठे बाकी शिष्य अर्थात् चारों पांडव और सौ कौरव बड़े हैरान थे कि इतना आसान-सा पाठ युधिष्ठिर को याद नहीं हुआ तो वह आगे क्या पढ़ेगा।

अगले दिन कक्षा में आते ही गुरु जी ने युधिष्ठिर को पाठ सुनाने को कहा तो उसने कहा, ''गुरु जी, मुझे अभी पाठ याद नहीं हुआ।'' उसके इतना कहने की देर थी कि कक्षा में बैठे सभी शिष्य हँसने लगे और युधिष्ठिर का मज़ाक उड़ाने लगे। गुरु जी ने

कहा, ''अच्छा कल याद करके सुना देना।'' किंतु जब अगले दिन भी उसे पाठ याद नहीं हुआ तो गुरु जी ने कहा कि जब तुम्हें पाठ याद हो जाए तभी तुम कक्षा में आना। इस तरह काफी दिन बीत गये और युधिष्ठिर कई दिन बाद जब कक्षा में गया तो सभी हँसने लगे। गुरु जी ने सबको शाँत किया और युधिष्ठिर ने विश्वास के साथ कहा, ''जी, गुरु जी, मुझे पाठ याद हो गया है।'' ''अच्छा तो सुनाओ।'' गुरु जी ने कहा। युधिष्ठिर ने पाठ सुनाया- 'सत्यं वद अर्थात् सच बोलो। गुरु जी कहने लगे,' बेटा! यह पाठ तो इतना सरल था परन्तु तुम्हें याद करने में इतने दिन क्यों लगे? उसने कहा, ''गुरु जी, यह पाठ बोलने और रटने में तो बहुत सरल है किंतु मेरे मुँह से कभी-कभी रोज़ झूठ निकल जाता था। फिर मैं आपको कैसे कह देता कि मुझे पाठ याद हो गया है। आज मैंने मन से सच बोलने का प्रण लिया है। मैं जीवन भर सच बोलूँगा।'' गुरु जी ने युधिष्ठिर को गले से लगा लिया और कहने लगे। बेटा! सचमुच सच बोलने का पाठ सारी कक्षा में से तुमने ही सबसे अच्छी तरह याद किया है।

शब्दार्थ

शिष्य = चेला, अनुयायी   मज़ाक उड़ाना = हँसी उड़ाना

बताओ

(क) गुरु जी ने शिष्यों को पहले दिन कौन-सा पाठ पढ़ाया ?

(ख) गुरु जी द्वारा पढ़ाए गए पाठ को किसने नहीं सुनाया और क्यों?

(ग) कक्षा में बैठे सभी शिष्य युधिष्ठिर का मज़ाक क्यों उड़ाते थे?

(घ) युधिष्ठिर को गुरु द्वारा पढ़ाए पाठ को याद करने में ज्यादा दिन क्यों लगे?

(ड) गुरु जी ने युधिष्ठिर को क्यों गले लगाया?

सही शब्दों पर गोले लगाओ

कोरव/कौरव	असान/आसान
गुरु/गुरू	हँसने/हसने
शिष्य/शिश्य	युधिष्ठर/युधिष्ठिर
हेरान/हैरान	प्रन्तु/परन्तु

समान अर्थ वाले शब्द जोड़ो

सौ	श्रेणी
गुरु	दिवस
वद	मिथ्या
शिष्य	आसान
बाकी	चेला
कक्षा	विद्यालय
पाठशाला	अध्यापक
दिन	शत
सरल	शेष
झूठ	बोलना

संयुक्त अक्षरों से बने शब्द पाठ में से चुनकर लिखो

क् + ष	= क्ष	कक्षा
द् + व	= द्व	-----
क् + य	= क्य	-----
प् + र	= प्र	-----

इस जाल में पाँच पाँडवों के नाम छिपे हैं। उन्हें ढूँढो। उन पर गोला लगाओ और उनके नाम लिखो।

क	स	न	कु	ल	द
यु	ट	त	ती	प	भी
धि	अ	र	जु	स	म
ष्ठि	र्जु	ध	ख	ह	अ
र	न	ब	न	दे	पी
त	च	भी	ध	व	त

1. युधिष्ठिर..................
2. ....
3. ....
4. ....
5. ....

पाठ–24

हिम्मत

मुसीबत के समय 'हिम्मत' से काम लिया जाये तो कभी भी हार का मुँह नहीं देखना पड़ता। हिम्मत, हौसला और दिलेरी ऐसे महान गुण हैं, जिनके होते हुए हार कहीं नज़र नहीं आती। बस जीत, जीत और जीत।

हमारे इतिहास में ऐसे अनेक शूरवीर हुये हैं जिन्होंने संकट के समय हिम्मत से काम लिया और जीत हासिल की। हमारे महान ग्रंथ रामायण और महाभारत ऐसे उदाहरणों से भरे पड़े हैं।

रामायण में रावण जैसे पराक्रमी योद्धा और विशाल सेना वाले शासक को श्रीराम की वानर सेना ने साहस के बल पर ही पराजित किया। महाभारत के युद्ध में कौरव संख्या में सौ थे और पाँडव केवल पाँच। फिर भी पाँडव विजयी हुये क्यों? क्योंकि पाँडवों में अद्भुत साहस था, संकटों से जूझने की शक्ति थी और उन्होंने ज़िन्दगी में मुसीबतें झेली थीं। इतिहास गवाह है कि सोलह वर्ष के बालक अभिमन्यु ने साहस के बल पर कौरवों की विशाल सेना को चीरते हुये अकेले ही चक्रव्यूह का भेदन किया और कौरव सेनापतियों के छक्के छुड़ा दिये। इस अमर सेनानी ने घायल होने पर भी साहस न छोड़ा। अकेला ही रथ का पहिया हाथ में लेकर शत्रुओं से लोहा लेता रहा और अंत में वीर गति को प्राप्त हुआ।

तेरह वर्ष की अबोध अवस्था में अकबर ने अपने शत्रुओं को साहस के बल पर ही धूल चटा दी और बाद में एक विशाल साम्राज्य की स्थापना की।

पंजाब के वीर महाराजा रणजीत सिंह न केवल महान योद्धा थे बल्कि उन्होंने जीवन में अनेक संकटों का साहस के बल पर ही सामना किया था । अटक की घटना उनके अद्भुत साहस और वीरता की याद दिलाती है।

आपकी सेना पठानों की सेना से बहुत कम थी। लड़ रही सेना ने आपसे और सेना की माँग की। रणजीत सिंह स्वयं ही सेना लेकर चल दिये। मार्ग में अटक नदी

तेज़ी से बह रही थी। शत्रुओं ने पुल तोड़ दिया था। नदी पार करने का कोई रास्ता नहीं था। सैनिक रुक गये। रणजीत सिंह ने आज्ञा दी ''सेना को दूसरी ओर पहुँचाने का शीघ्र प्रबन्ध किया जाये।''

सरदारों ने कहा, ''महाराज! यह अटक नदी है, इसका पानी बड़े वेग से बह रहा है, पुल टूट चुका है, आगे जाने का कोई रास्ता नहीं है।''

यह सुनते ही आपका साहस जाग उठा और आप बोले, ''यह अटक उनके लिये अटक है जिनके मन में अटक हो। रणजीत सिंह के लिए अटक अटक नहीं बन सकता। यह कहकर उन्होंने अपने घोड़े को एड़ी लगायी। घोड़ा नदी में कूद पड़ा और देखते ही देखते वे दूसरे तट पर पहुँच गये। यह देखकर सभी सैनिकों में साहस जाग उठा। वे भी अपने महाराज के पीछे नदी में कूद पड़े। सारी सेना नदी पार कर गयी। इस प्रकार समय पर पहुँचकर आपने शत्रुओं के दाँत खट्टे किये।

देखा बच्चो, हिम्मत के बल पर बड़े से बड़े संकट का भी सामना किया जा सकता है। आवश्यकता है केवल सूझ-बूझ और दृढ़ इरादे की। जीवन में तुम हारोगे भी और जीतोगे भी। तुम्हें हार को जीत समझ कर चलना चाहिये। फूलों में भी तो काँटे होते हैं। चींटी कितना छोटा-सा जीव है। उसकी हिम्मत देखिये। वह अपने भार से दस गुणा भार उठा लेती है। आप यह मत सोचिये कि लोग आपके बारे में क्या सोच रहे हैं? बस आप तो चलते जाइये, चलते जाइये। चलने में ही जीत निहित होती है। रुक जाना तो मौत की निशानी है। अपना उद्देश्य अभी से निश्चित कर लो और आगे ही आगे बढ़ते जाओ। आपमें से ही किसी को शिवा जी बनना है, किसी को झाँसी की रानी तथा किसी को कल्पना चावला। बच्चो, जो बच्चे साहस से भरा कार्य करते हैं भारत सरकार उन्हें 'वीरता पुरस्कार' से सम्मानित करती है।

शब्दार्थ

शूरवीर	=	बहादुर	चक्रव्यूह	=	चक्र के आकार में सेना की स्थापना
संकट	=	मुसीबत	साम्राज्य	=	विशाल राज्य
अद्भुत	=	अनोखा	अबोध	=	नासमझ

शासक	=	राजा	उद्देश्य	=	लक्ष्य
पुरस्कार	=	इनाम	निहित	=	रखा हुआ

बताओ

1. महाभारत के युद्ध में कौरवों की संख्या कितनी थी?
2. पाँडव कितने थे? उनके नाम लिखो।
3. अभिमन्यु वीरगति को कैसे प्राप्त हुआ?
4. किस घटना से पता चलता है कि महाराजा रणजीत सिंह एक साहसी व्यक्ति थे?
5. चींटी से आप क्या प्रेरणा ले सकते हैं?
6. वीरता पुरस्कार किन बच्चों को दिया जाता है?
7. यदि आपने जीवन में कोई साहस वाला कार्य किया हो तो उसे लिखो।

वाक्य बनाओ

छक्के छुड़ाना	=	हौसला ढह जाना
वीरगति को प्राप्त होना	=	युद्ध भूमि में मारा जाना
धूल चटाना	=	हराना
दाँत खट्टे करना	=	हराना

समान अर्थ वाले शब्द लिखो

हिम्मत	=	हौसला
संकट	=	
पराजित	=	
युद्ध	=	
शासक	=	
पुरस्कार	=	
नदी	=	
घोड़ा	=	

मिलान करो

हार	ज्यादा
फूल	अनिश्चित
कम	चलना
रुकना	जीत
निश्चित	काँटा

नये शब्द बनाओ

हिम्मत	=	म्म	=	**चम्मच**
युद्ध	=	द्ध	=	....
संख्या	=	ख्य	=	....
अन्त	=	न्त	=	....
अवस्था	=	स्थ	=	....
रास्ता	=	स्त	=	....
प्रबंध	=	न्ध	=	....

दिये गये शब्दों को पढ़ो और उनमें आए संयुक्त अक्षरों को लिखो

शत्रु	त् + र	=	त्र
आज्ञा	....	=	.....
दृढ़	....	=	.....
श्री	....	=	.....
चक्र	....	=	.....
मार्ग	....	=	.....

शब्द में शब्द को ढूँढकर लिखो

महाभारत

महा   भारत

सामना

श्रीराम

सेनापतियों

महाराज

पाठ में आए व्यक्तियों और ग्रंथों के नाम छाँट कर लिखें

व्यक्तियों के नाम : ....

: ....

: ....

: ....

: ....

: ....

: ....

: ....

ग्रंथों के नाम : ....

: ....